

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ (سورة النساء 59)

# चारों इमाम की तक्लीद और मक़ामे अबू हनीफा (रह)

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी  
Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

[www.najeebqasmi.com](http://www.najeebqasmi.com)



يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ  
وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ (سورة النساء 59)

# चारों इमाम की तक्लीद और मक़ामे अबू हनीफा (रह)

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी

[www.najeebqasmi.com](http://www.najeebqasmi.com)

All rights reserved  
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

**चारों इमाम की तक्लीद और मक़ामे अबू हनीफ़ा (रह)**  
**Following (Taqleed) the four Imams**  
**& Status of Imam Abu Hanifah**

**By**  
**डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी**  
**Dr. Mohammad Najeeb Qasmi**

<http://www.najeebqasmi.com/>  
[najeebqasmi@gmail.com](mailto:najeebqasmi@gmail.com)  
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)  
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)  
**Whatsapp:** [00966508237446](tel:00966508237446)

**पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016**

**Address for Gratis Distribution मुफ़्त मिलने का पता:**  
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India  
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

## विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल कसिम नोमानी	8
3	प्रतिबिंब: मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ कासमी	9
4	प्रतिबिंब: प्रोफेसर अख़तरूल वासे साहब	10
5	चारों अइम्मा की तकलीद कुरान व हदीस की इत्तिबा ही है	11
6	तकलीद की तारीफ़	16
7	तकलीद के सबूत दो आयाते कुरानिया	18
8	तकलीद के सबूत हदीसे नबवी	21
9	मकसद तकलीद और उसकी हकीकत	22
10	इजतिहाद और तकलीद की ज़रूरत	25
11	अहदे सहाबा व ताबेईन तकलीद	27
12	अइम्मा अरबा की तकलीद	30
13	मज़ाहिबे अरबा तकलीद शख़्सी का इंहिसार फज़ले रब्बानी है	33
14	तकलीदे शख़्सी का वजूब	34
15	अइम्मा हदीस मुक़ल्लिद थे	35
16	हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा की तकलीद और उसका फैलाओ	39
17	बर्रे सगीर अदमे तकलीद का आगाज़	41
18	तकलीद अइम्मा पर किए जाने वाले इतिराजात की हकीकत	41

19	तकलीद पर किए जाने वाले इतिराज़ात के जवाबात	43
20	इमाम अबू हनीफा: हयात और कारनामे	5
21	हज़रत इमाम हनीफा के मुख्तसर हालाते ज़िन्दगी	5
22	हज़रत इमाम अबू हनीफा के बारे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बशारत	57
23	हज़रत इमाम अबू हनीफा के ताबइयत	5
24	सहाबए किराम से इमाम अबू हनीफा की रिवायात	60
25	फुक्हा व मुहद्दीसीन की बस्ती शहर कूफा	60
26	हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के अहदे खिलाफत में तदवीन हदीस और इमाम अबू हनीफा	62
27	80 हिजरी से 150 हिजरी तक इस्लामी हुक्मत और हज़रत इमाम अबू हनीफा	64
28	हज़रत इमाम अबू हनीफा और इल्मे हदीस	6
29	हज़रत इमाम अबू हनीफा के असातज़ा	6
30	हज़रत इमाम अबू हनीफा के	7
31	हज़रत इमाम अबू हनीफा की	7
32	हज़रत इमाम अबू हनीफा की शान बाज़ उलमाए उम्मत के अक़वाल	78
33	हज़रत इमाम अबू हनीफा के उलूम का नफा	8
34	हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक बाज़ अरबी किताबें	81
35	हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक बाज़ उर्दू किताबें	84
36	लेखक का परिचय	8

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيمِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ.

## प्रस्तावना

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ़ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ़ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में घोड़े दौड़ा दिए हैं ॥ इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताकतें पुन कर दें जो इस्लाम और मुस्लिमानों के लिए नुकसानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट ([www.najeebqasmi.com](http://www.najeebqasmi.com)) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तकाजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में खुम्सी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए कुरान व हदीस की रौशनी में मुहत्तसर दीनी पैगाम खुबसूरत इमेज की शकल में मुहत्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मकबूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (**दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर**) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तकरीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफ़ीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

यह किताब (चारों इमाम की तकलीद और मकामे अबू हनीफा रह) दादा मोहतरम शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मोहम्मद इस्माइल संभली की तकलीद की अहमियत व ज़रूरत पर एक अज़ीम किताब (तकलीदे अइम्मा) से इस्तिफादा करके वक़्त की ज़रूरत के पेशे नज़र लिखी गई है। हज़रत इमाम अबु हनीफा की शख़्सीयत पर लिखा गया तफ़्सीली मज़मून भी किताब में शामिल है।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहाँ की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.



(Mufti) Abul Qasim Nomani

Muslimah (MC) Darul Uloom Deoband



مفتی: ابو القاسم نعمانی

مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululoom-deoband.com

Ref. No.....

Date:.....

باسمہ سبحانہ و تعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبلی تھیم ریاض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہنچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کر کے، دینی کام کرنے والوں کے لئے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔

چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور موبائل ایپ اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہنچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرا دیے ہیں، جو الیکٹرونک بک کی شکل میں جلد ہی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔ اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ مزید علمی افادات کی توقعیں بنیں۔

ابورکاتب عثمان فرما

ابو القاسم نعمانی غفرلہ

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۱۴۳۷ھ

مولانا محمد اسرار الحق قاسمی  
Mohammad Asrarul Haque  
Member of Parliament  
(Lok Sabha)



1E, South Avenue, New Delhi, 110011  
Ph: 811-23785046 Telefax: 011-23786314  
E-mail: mhaqasmi@gmail.com

Date: 19/03/2016

Date: 19/03/2016

### تائراٹ

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا اہم تقاضہ ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی فکر رکھنے والے حضرات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے جب آئن انٹرنیٹ پر دین کے تعلق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و ایمان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں غزیرم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سرفہرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ سادہ مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلا رہے ہیں۔ ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا قلم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سہولتوں سے فائدہ اٹھاتے ہوئے اپنی ویب سائٹ پر کئی کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم و دینی کے ساتھ علم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ فعال و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک باد کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعاگو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

خط

(مولانا) محمد اسرار الحق قاسمی

ایم۔ بی۔ لوک-بھیا (انڈیا)

صدر آل انڈیا تعلیمی و ملی کارگزاری، نئی دہلی

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

پرو. اکھتارول واسے

آیوکت

PROF. AKHTARUL WASEY  
Commissioner



सत्यमेव जयते

भाषाजात अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic  
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs  
Government of India

تقریظ

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد جس طرح ہم کی معلومات انٹرنیٹ کے ذریعہ آنکھوں کی دوچیلوں میں سما گئی ہیں۔ اس نے ”گاہگر میں ساگر“ اور ”گوڈ میں دریا“ کے تجزیاتی تصورات کو نہ صرف حقیقت بنا دیا ہے بلکہ ان پر ہمارا انحصار روز بروز ناگزیر ہوتا جا رہا ہے۔ گوگل (Google) ہو یا ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا پھر دوسری سوشل سائٹس انہوں نے ترسیل و ابلاغ کو وہ حصہ جہت رنج اور فکری تیزی عطا کی ہے کہ فراقی فیصل کے تمام تصورات بے معنی ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اطلاعی انقلاب نے ایک پیچیدہ مسئلہ یہ پیدا کر دیا ہے کہ اطلاعات رسائی اور خبروں تک رسائی میں حقائق سے گریز یا ان کو سچ کرنے کا چیلن بھی اس طرح شامل ہو گیا ہے اور اس سچائی کو اسلام اور مسلمانوں سے بہتر کون جانتا ہے۔ دوسرا سنگین مسئلہ یہ ہے کہ باخبر ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لئے اس مطالعہ کی عادت لوگوں میں خاصی کم ہوتی جا رہی ہے۔ کیونکہ موبائل کے روپ میں دنیا ان کی مٹھی میں سمائی رہتی ہے اور وہ سب کچھ اسی کے ذریعہ جانتا چاہتے ہیں۔ اس چیلنج اور مسئلے کے حل کے لئے ضروری ہے کہ ہم غلط بیانیوں اور حقائق کو دبا کر آشکار کرنے کے لئے اور اپنے ہم مذہبوں خاص طور پر نئی نسل کو صحیح معلومات فراہم کرنے، انہیں رہنمائی دینے اور ان کے شعور میں بالیدگی اور پختگی لانے کے لئے اس اطلاعی انقلاب کے جتنے بھی وسائل و ذرائع ہیں ان کا بھرپور استعمال کریں۔

مجھے خوشی ہے کہ ہمارے ایک موثر اور معتبر عالم حضرت دین مولا نا محمد نجیب قاسمی نے جواز ہر بند اور اہل علم و دینہ کے قابل فخر اپنے قدیم میں سے ہیں اور عرصہ سے مملکت سعودی عرب کی راجدھانی ریاض میں برسر کار ہیں، انہوں نے اس ضرورت کو کوئی سمجھا اور دنیا کی پہلی اسلامی موبائل ایپ ”دین اسلام“ اور ”جہیز“ اور ”اردو انگریزی اور ہندی میں تیار کیا تھا اور اب وقت گزرنے کے ساتھ نئے سوالات کی روشنی اور علمی ضرورتوں کے تحت نئے مضامین اور نئے بیانات شامل کر کے ایک دفعہ پھر نئے انداز کے ساتھ پیش کرنے جا رہے ہیں۔ مزید برآں زندگی کے مختلف پہلوؤں پر دین کے حوالے سے دوسرے مضامین کے الیکٹرونک ایڈیشن کو بھی منظر عام پر لایا جا رہا ہے۔ مجھے دق تو تھا مگر مولا نا محمد نجیب قاسمی صاحب کے مقالے ”الیکٹرونک مضامین اور علمی فتوحات سے استفادہ کرنے کا موقع ملتا رہا ہے۔ مجھے ان کے متوازن، اعتدال پسند اور عالمانہ انداز تحریر نے ہمیشہ متاثر کیا۔ میں مولا نا نجیب قاسمی کی خدمت میں ہر یہ تحریک و تشکر پیش کرتا ہوں اور خدا سے دعا کرتا ہوں کہ وہ ان کی عمر میں درازی و علم میں اضافہ اور قلم میں مزید پختگی عطا فرمائے۔ کیونکہ:

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عشق کے استقاں اور بھی ہیں

استمیر

(پروفیسر اختر الواسع)

سابق ڈائریکٹر، ڈاکٹر حسین انیس ٹیٹ آف اسلامک اسٹڈیز  
سابق صدر، شعبہ اسلامک اسٹڈیز جامعہ اسلامیہ دہلی  
سابق دانش چیرمین، اردو اکادمی دہلی

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيمِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ.

## चारों अइम्मा की तकलीद कुरान व हदीस की इत्तिबा ही है

दादा मोहत्तरम शैखुल हदीस हज़रत मौलाना मोहम्मद इमाईल संभली (1899-1975) की तकलीद की अहमियत व ज़रूरत पर एक जामे व अज़ीम किताब (तकलीदे अइम्मा) से इस्तिफादा करके वक़्त की ज़रूरत के पेशे नज़र यह मज़मून लिख रहा हूँ, हालांकि इस मौजू पर कुरान व हदीस की रौशनी में बहुत कुछ लिखा जा चुका है।

असरे हाज़िर में गैर मुक़ल्लिदीन हज़रात इजमा-ए-उम्मत के बरखिलाफ तकलीद के मौजू पर आम लोगों में जो शक व शुबहात पैदा कर रहे हैं, इससे उम्मत मुस्लिमा के दरमियान इख़िलाफात में इज़ाफा ही हो रहा है। अल्लाह तआला से दुआगो हूँ कि हमें फुर्रई मसाइल के इख़िलाफात में अपनी सलाहियतें न लगा कर उम्मत मुस्लिमा की इसलाह और आपस में इत्तिहाद व इत्तिफाक करने में लगाने वाला बनाए, क्योंकि इस वक़्त इसलाम मुखालिफ ताक़तें चारों तरफ से इसलाम और मुसलमानों पर हमला आवर हैं। हमें एक साथ हो कर दुनियावी माद्री ताक़तों से मुकाबला करने की ज़रूरत है।

जहां तक अहकाम व मसाइल में इख़िलाफ का तअल्लुक है तो इब्तिदा-ए-इसलाम से ही इस किस्म का इख़िलाफ मौजूद है। ग़ज़वा-ए-अहज़ाब से वापसी पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा-ए-कराम की एक जमाअत को फौरन बनू कुरैज़ा रवाना फरमाया और कहा कि असर की नमाज़ वहां जा कर पढ़ो। रास्ता में जब नमाज़े असर का वक़्त ख़त्म होने लगा तो सहाबा-ए-कराम में

असर की नमाज़ पढ़ने के मुतअल्लिक इख्तिलाफ हो गया। एक जमाअत ने कहा कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के मुताबिक हमें बनू कुरैज़ा ही में जा कर नमाज़े असर पढ़नी चाहिए चाहे असर की नमाज़ क़ज़ा हो जाए, जबकि दूसरी जमाअत ने कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने का मंशा यह था कि हम असर की नमाज़ के वक्त में बनू कुरैज़ा पहुंच जाएंगे, लेकिन अब चूंकि असर के वक्त में बनू कुरैज़ा की बस्ती में पहुंच कर नमाज़े असर पढ़ना मुमकिन नहीं है लिहाज़ा हमें असर की नमाज़ अभी पढ़ लेनी चाहिए। इस तरह सहाबा-ए-कराम दो जमाअत में बंट गए, उक़ू हज़रात ने नमाज़े असर वहीं पढ़ी जबकि दूसरी जमाअत ने बनू कुरैज़ा की बस्ती में जा कर क़ज़ा पढ़ी। जब सुबह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू कुरैज़ा पहुंचे और इस वाक्या से मुतअल्लिक तफसीलात मालूम हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी जमाअत पर भी कोई तन्कीद नहीं की और न ही इस अहम मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई हिदायत जारी की। (बुखारी व मुस्लिम) जिससे मालूम हुआ कि इख्तिलाफ तो कल क़यामत तक जारी रहेगा और इस किस्म का इख्तिलाफ बुरा नहीं है।

ग़र्ज़कि इसलाम में इख्तिलाफ की गुंजाइश तो है मगर दुश्मनी और लड़ाई झगड़ा करने से मना फरमाया गया है, जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में फरमाया आपस में झगड़ा न करो वरना बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी। (सूरह अंफाल 46) आज दुनियावी ताक़तें इसलाम और मुसलमानों को ज़लील व रुसवा करने के लिए हर मुमकिन हरबा इस्तेमाल कर रही

है, जिससे हर जी शअूर वाकिफ है। लिहाज़ा हम सबकी जिम्मेदारी है कि अपने इख़्तिलाफ को सिर्फ़ इजहारे हक़ या तलाशे हक़ तक महदूद रखें। अपना मौक़िफ़ ज़रूर पेश करें लेकिन दूसरे की राय की सिर्फ़ इस मुक़ियाद पर मुखालफ़त न करें कि उसका तअल्लुक दूसरे मक्तबे फ़िक़्र से है। हमें उम्मत मुस्लिमा के शीराज़ा को बिखेरने के बजाये उसमें पैवन्दकारी करनी चाहिए। अहले सुन्नत का 95 फीसद से ज़्यादा तबका एक हज़ार साल से ज़्यादा अरसा से चारों अइम्मा (इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद बिन हम्बल रहमुतल्लाह अलैहिम) की तकलीद के मसअला पर मुत्तफ़िक़् चला आ रहा है और चारों अइम्मा की तकलीद कुरान व हदीस की इत्तिबा ही है। जिस तरह आज हम 1400 साल गुज़रने के बाद भी कुरान व हदीस को ही शरीअते इस्लामिया के दो अहम माखज़ मानते हैं, इसी तरह उन अइम्मा ने भी कुरान व हदीस की रौशनी में ही अहकाम व मसाइल बयान फरमाए हैं। कुरान व हदीस के पैग़ाम को ही दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाने में उन अइम्मा ने अपनी जान व माल व वक्त की अज़ीम कुरबानियां दीं। वह अहकाम व मसाइल जिनके अमल करने में कोई फर्क भी नहीं है यानी 1400 साल पहले और आज भी अमल का एक ही तरीका है और दलाइले शरइया भी वही हैं, नीज़ कोई नया मसअला भी नहीं है कि असरे हाजिर के फुक्हा व उलमा को इस पर इजतिहाद व इस्तिबात करना पड़े, मसलन नमाज़ की अदाएगी का तरीका। इस तरह के मसाइल में मज़ीद इजतिहाद और बहस व मुबाहसा की ज़रूरत नहीं है, बल्कि कुरान व हदीस की रौशनी में ताबेईन व तबे ताबेईन अइम्मा ने जो बात सही समझी है इसी पर किनाअत कर

लिया जाए, क्योंकि इन हज़रात ने सहाबा और ताबेईन की सोहबत में रह कर कुरान व हदीस का इल्म हासिल किया था। अगर कोई शख्स कुरान व हदीस की रौशनी पर मबनी उनकी राय पर अमल नहीं करना चाहता तो असरे हाज़िर के किसी आलिमे दीन की राय पर अमल करके उनकी तकलीद करले, लेकिन चारों अइम्मा खास कर 80 हिजरी में पैदा हुए मशहूर फकीह व ताबेई हज़रत इमाम अबू हनीफा की कुरान व हदीस पर मबनी राय को कुरान व हदीस के खिलाफ और इक्कीसवीं सदी में पैदा हुए आलिमे दीन की राय को कुरान व हदीस के ऐन मुताबिक़ करार देना उम्मत मुस्लिमा के दरमियान एक फितना बरपा करना नहीं तो फिर क्या है? ग़ैर मुक़ल्लेदीन इख़िलाफी मसाइल को इस तरह लोगों के सामने बयान करते हैं कि आज के दौर का आलिमे दीन तो ग़लती कर ही नहीं सकता, लेकिन बाज़ हज़रात उनकी तरफ़ मंसूब अक़वाल और उलमा-ए-अहनाफ़ के कुरान व हदीस की रौशनी में अक़वाल को लोगों के सामने इस तरह पेश करते हैं कि इक्कीसवीं सदी के आलिम नेजो समझा है सिर्फ़ वहीं सही है और हज़रत इमाम अबू हनीफा और उलमा-ए-अहनाफ़ ने जो समझा है वह सब ग़लत है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ी अल्लाहु अन्हु का इल्मी वरसा हज़रत इमाम अबू हनीफा के मशहूर उस्ताज़ शैख़ हम्माद और मशहूर ताबेईन शैख़ नखई व शैख़ अलक़मा के ज़रिया हज़रत इमाम अबू हनीफा तक पहुंचा है। शैख़ हम्माद सहाबी रसूल हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाहु अन्हु के भी सबसे करीब और मोतमद शागिर्द हैं। शैख़ हम्माद की सुहबत में इमाम अबू हनीफा 18 साल रहे और शैख़ हम्माद के इंतिकाल के बाद कूफा में उनकी मसनद पर हज़रत

इमाम अबू हनीफा को ही बैठाया गया।

इन दिनों गैर मुकल्लेदीन हज़रात इमाम अबू हनीफा और उलमा-ए-अहनाफ की कुरान व हदीस पर मबनी राय को इस तरह लोगों के सामने पेश करते हैं कि इमाम अबू हनीफा और उलमा-ए-अहनाफ यह कह रहे हैं जबकि कुरान व हदीस का फैसला यह है, हालांकि इमाम अबू हनीफा और उलमा-ए-अहनाफ के दलाएल तौरैत या ज़बूर या इंजील या रामायण या गीता से नहीं लिए गए हैं बल्कि उन्हीं भी कुरान व हदीस की रौशनी में ही अहकाम व मसाइल बयान फरमाए हैं और वह अपने ज़माने में इल्म व अमल के दरखशा सितारा थे। मसलन हज़रात इमाम अबू हनीफा और उलमा-ए-अहनाफ ने कुरान व हदीस की रौशनी में कहा कि इस्तेमाली ज़ेवरात पर भी निसाब पहुंचने पर ज़कात वाजिब है। यह कौल कुरान व हदीस के दलाएल से मदलूल होने के साथ साथ इहतियात पर भी मबनी है मगर बाज़ हज़रात अपने उलमा की तकलीद में इस कौल को भी कुरान व हदीस के खिलाफ कहने में अल्लाह से नहीं डरते, हालांकि सउदी अबू के साबिक मुफ्ती आजम शैख बिन बाज़ की भी यही राय है कि इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात वाजिब है। यह हज़रात शैख इबने बाज़ की राय को सिर्फ यह कह कर छोड़ देते हैं कि यह उनकी राय है लेकिन इसी मसअला में इमाम अबू हनीफा और उलमा-ए-अहनाफ की राय को कुरान व हदीस के खिलाफ करार देते हैं। इसी तरह चेहरे के पर्दे के मुतअल्लिक अपने मुरशिद शैख नासिरूद्दीन की राय पर तबसरा करने के लिए भी तैयार नहीं हैं लेकिन वित्र की तीनरिकात के बज़ाए एक रिकात वित्र को लोगों के सामने इस तरह पेश करते हैं कि गोया नमाज़े वित्र की तीन रिकात सही नहीं है हालांकि बुखारी व



मुस्लिम की जिस हदीस को 8 रिकात तरावी के लिए यह हज़रात दलील के तौर पर पेश करते हैं उस में वज़ाहत के साथ वित्र की तीन रिकात का जिक्र मौजूद है। गर्जकि यह हज़रात ज़ाहिरी तौर पर तो तकलीद की मुखालफत करते हैं लेकिन उनके उलमा ने जो कुछ कहा या लिखा है उससे ज़र्रा बराबर भी हटने के लिए तैयार नहीं हैं, चाहे उनके उलमा का कौल दलाएले शरीइया के एतेबार से कमज़ोर ही क्यों न हो, यह तकलीद नहीं तो और क्या है। बात सिर्फ इसीपर खत्म नहीं होती बल्कि यह हज़रात उन अइम्मा की शान में उमूमन और हज़रत इमाम अबू हनीफा की शान में खुसूसन तौहीन आमेज़ अल्फाज़ इस्तेमाल करते हैं, यहां तक कि उनमें से बाज़ मुतशद्देदीन इतना तक कह जाते हैं कि हज़रत इमाम अबू हनीफा उलूमे कुरान व सुन्नत से कम वाकिफ थे। यानी नेपाल के एक गांव में अहले हदीस के मदरसा में हदीस की अदना किताब पढ़ाने वाला तो मुहद्दिस कबीर व फकीह बन गया और इमाम बुखारी, इमाम मुस्लिम, इमाम तिरमीज़ी, इमाम नसई, इमाम अहमद बिन हम्बल जैसे बड़े बड़े मुहद्दिसीन रहमतुल्लाह अलैहिम के असातिज़ा का उस्ताज़, सहाबा और बड़े बड़े ताबेईन से सुहबत याफता और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ी अल्लाहु अन्हु की कूफा की मसनद पर बैठने वाला शख्स उलूमे कुरान व हदीस से नावाकिफ। यह सिर्फ और सिर्फ हज़रत इमाम अबू हनीफा की मक़बूलियत से दुश्मनी व झगड़ा नहीं तो और किया है।

### तकलीद की तारीफ

अगर किसी शख्स ने फकीह आलिमे दीन से कोई मसअला पूछा।

फकीह आलिमे दीन ने कुरान व हदीस के दलाएल जिक्र किए बेगैर कुरान व हदीस की रौशनी में उसका जवाब दे दिया और उस शख्स ने आलिमे दीन की बात पर अमल कर लिया जैसा कि 99 फीसद उम्मत मुस्लिमा का तबका अरसा दराज़ से करता चला आ रहा है तो इसी का नाम तकलीद है। यानी सवाल करने वाले को पूरा यकीन है कि फकीह आलिमे दीन ने कुरान व हदीस की रौशनी में ही मसअला का जवाब दिया है और वाक्या भी यही है कि उस आलिमे दीन ने कुरान व हदीस की रौशनी में ही जवाब दिया है, मगर सवाल के जवाब के वक्त उसने किसी दलील का मुतालबा नहीं किया, अगर बाद में सवाल करने वाले को मुजतहिद की दलील का इल्म हो जाए या अपने ज़ाती मुताला से इस मसअला के मुतअल्लिक कुरान व हदीस के बहुत से दलाएल दरयाफ्त हो गए तो यह हुकुम तकलीद के मुनाफी नहीं है।

तकलीद मुतलक जिसकी तारीफ ऊपर बयान की जा चुकी है उसकी दो किसमें हैं।

**1) तकलीद शखसी** - एक खास मुजतहिद की तरफ जो मज़हब और मसलक मंसूब हो उसके जुमला मसाइल मुफताबिहा को दलील तलब किए बेगैर क़बूल कर लेना और उसको अपने अमल के लिए काफी समझना। यह मसाइल मुफताबिहा इस इमाम मुजतहिद के भी हो सकते हैं, उसके शागिर्दों के भी और उन उलमा के भी हो सकते हैं जो इस इमाम मुजतहिद के मुकल्लिद हों, बहरहाल उन सब का मजमूआ एक मज़हब मुअय्यन कहलाता है, मसलन फिक़हा हनफी व मालकी वगैरह।

**2) तकलीद गैर शखसी** - मुख्तलिफ मज़ाहिब के बहुत से मुजतहेदीन

के मसाइल को उनकी दलील तलब किए बेगैर अपना मामूलबिहा ठहराना यानी कोई मसअला किसी मुजतहिद के मज़हब का लेकर अमल कर लेना और एक मुअऐयन मुजतहिद के मज़हब के तमाम मसाइल मुफ़्ताबिहा का पाबन्द न होना।

गर्जकि तकलीद की हकीकत इससे ज़्यादा कुछ नहीं है कि एक शख्स बराहे रास्त कुरान व हदीस से अहकाम मुस्तंबत करने की सलाहियत नहीं रखता है जैसा कि 99 फीसद से ज़्यादा उम्मत मुस्लिमा का हाल है। वह जिसे कुरान व हदीस के उलूम का माहिर समझता है उसके फहम व बसीरत और इल्म पर एतेमाद करके उसकी तशरीहात के मुताबिक अमल करता है और यह वह चीज़ है जिसका जवाज़ बल्कि वजूब कुरान व सुन्नत के बहुत से दलाएल से साबित है, यहां सिर्फ दो आयाते कुरानिया और एक हदीसे नबवी से इसका सबूत पेश करने पर इकतिफा किया जाता है।

### तकलीद के सबूत में दो आयाते कुरानिया

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है ऐ ईमान वालो! तुम कहना मानो अल्लाह का और कहना मानो पैगम्बर और ऊलुल अम्र (दीन के मुजतहेदीन) का जो तुम में से हैं। इस आयत में अल्लाह तआला ने ऊलुल अम्र की इताअत और फरमाबरदारी का हुकुम फरमाया है, ऊलुल अम्र कौन लोग हैं इसकी तफसीर बाज़ मुफस्सेरीन ने सुलतान और बादशाह से की है और बाज़ मुफस्सेरीन ने इमाम मुजतहिद से फरमाई है लेकिन गौर किया जाए तो इसमें कोई तज़ाद नहीं है यह सब ऊलुल अम्र में दाखिल हैं। अमर दो तरह के होते हैं, दुनियावी और दीनी। मुल्क की सियासत के एतेबार से सलातीन और बादशाह

ऊलुल अम्र हैं यानी मुस्की व हुकूमती इतिजामात में मुस्तान का हुकुम बजा लाना जरूरी है, वरना दुनियावी मामलात में सख्त किसम का इतिशार पैदा होगा। शरीअत के ऊलुल अम्र अइम्मा मुजतहेदीन हैं जो किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह से वाकिफ और इस्तिबात मसाइल पर कादिर होते हैं, लिहाज़ा शूरू के ऊलुल अम्र अइम्मा मुजतहेदीन हुए और शरई उमूर में उनकी ताबेदारी लाज़िम हुई। ऊलुल अम्र की इस वज़ाहत से यह बात साफ हो गई कि आयते करीमा से यह अमर साबित है कि वह मुसलमान जो खुद मुजतहिद नहीं हैं उनको किसी मुमतहिद का हुकुम बजा लाना वाजिब और ज़रूरी है। चूंकि अइम्मा अरबा बहुत बड़े मुजतहिद हैं, अगर उनका इत्तिबा किया जाए तो यह बात इस आयते करीमा से बखूबी साबित है गर्जकि अक्वल दर्जा में अल्लाह की इताअत कुफ़ूस् फरमाया गया है और दूसरे दर्जा में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी करने का हुकुम दिया गया है और तीसरे दर्जा में मुजतहेदीन के फरमान पर चलने का हुकुम दिया गया है। सहाबी रसूल व मुफस्सिरे कुरान हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि ऊलुल अम्र से मुराद असहाबे फिक्रहा व असहाबे दीन हैं। (मुत्तदरक हाकिम, किताबुल इल्म, बाब फी तौकीरिल आलिम)

इसी तरह अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है तुम पूछो ज़िक्र वालों से अगर तुम नहीं जानते, यहां ज़िक्र से मुराद इल्म है। (तफसीर इबने कसीर) यानी जो लोग खुद अहकामे शरीइया से वाकिफ न हों वह अहले इल्म से पूछ करके उनपर अमल करें। हाफिज़ इबने अब्दुल बर लिखते हैं उलमा-ए-कराम का इस बात पर इत्तिफाक है

कि अवाम के लिए अपने उलमा की तकलीद वाजिब है और अल्लाह के कौल से यही लोग मुराद हैं और सबका इत्तिफाक है कि अंधे पर जब क़िबला मुशतबा हो जाए तो जिस शख्स की तमीज़ पर उसे भरोसा है क़िबला के सिलसिला में उसकी बात माननी लाज़िम है, इसी तरह वह लोग जो इल्म और दीनी बसीरत से आरी (जानकार नहीं) हैं उनके लिए अपने आलिम की तकलीद वाजिब है। (जामे बयानुल इल्म व फुजला)

गर्जकि दोनों आयात में वज़ाहत मौजूद है कि अहकाम व मसाइल से नावाकिफ हज़रात उलमा व फ़क़हा से मालूम करके अमल करें। और यह बात इंसानी अक़ल और फितरत के ऐन मुताबिक़ भी है कि जब हम अपने तमाम दुनियावी मामलात में तकलीद करते हैं, मसलन इलाज के लिए डाक्टरों पर, मकान के लिए इंजीनियरों पर और कानूनी मशवरा के लिए वकीलों पर भरोसा करते हैं। साइंसदानों के तहकीक़ पर पूरा एतेमाद किया जाता है। नीज़ तारीख में मुअर्रिखीन व मुहक्केकीन की आरा और हदीस के रावी को सिकह या कमजोर करार देने के लिए माहेरीन असमाउर रिजाल और मुहद्दीसीन की आरा पर मुकम्मल भरोसा किया जाता है, आयाते कुरानिया को नासिख व मंसूख करार देने में मुस्सेरीन की आरा, तजवीद के कवाएद में कुरा की आरा और सीरत नबवी में अहले सीयर की आरा को क़बूल किया जाता है। इसी तरह अहकामे शरीइया में भी ज़रूरी है कि इंसान अपने से ज्यादा साहबे इल्म व मुजतहिद की राय पर अमल करे, इसी का नाम तकलीद है।

## तकलीद के सबूत में हदीसे नबवी

हज़रत हुजैफा रज़ी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुझ को मालूम नहीं कि तुम लोगों में कब तक जिन्दा रहूँगा, सो तुम लोग इन दोनों शख्सों की इकतिदा करना जो मेरे बाद होंगे और हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ी अल्लाहु अन्हुम की तरफ इशारा फरमाया (तिरमीज़ी) जाहिर है कि मेरे बाद से इन दोनों हज़रात का ज़माना खिलाफत मुराद है और मतलब यह है कि उनके खलीफा होने की हालत में उनका इत्तिबा करना और यह भी जाहिर है कि एक वक्क में खलीफा एक ही साहब होंगे, लिहाजा अबू बकर की खिलाफत में उनकी पैरवी करना और हज़रत उमर की खिलाफत में हज़रत उमर की ताबेदारी करना। पस एक जमाना खास तक एक मुऐयन शख्स के इत्तिबा का हुकुम फरमाया और यह नहीं फरमाया कि उन से अहकाम और मसाइल की दलील की दरयाफ्त कर लिया करना और इसी को तकलीद शखसी कहते हैं। जिसका सबूत इस कौली हदीस से बखूबी हो गया, नीज इस हदीस में इकतिदा का लफ्ज इस्तेमाल किया गया है जो इतिजामी उमूर में इस्तेमाल नहीं होता इसका मफहूम बेऐनेही वही है जो बयान किया जा चुका है। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुख्तलिफ इलाकों में सहाबा-ए-कराम को भेजा और मुसलमानों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिदायत होती कि वह उनकी तालीमात पर अमल करें। हज़रत मुसअब बिन उमैर को मदीना भेजा गया, हज़रत अली और हज़रत मआज बिन जबल रज़ी अल्लाहु अन्हुम यमन भेजे गए, अहदे फारुकी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद को कूफा भेजा गया। जाहिर

है कि वहां के लोग उन्हीं के फतवे पर अमल करते थे, यही तकलीद है।

### मकसद तकलीद और उसकी हकीकत

दीने इसलाम की असल दावत यह है कि सिर्फ अल्लाह तआला की इताअत की जाए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कौल व फेल से अहकामे इलाही की तर्जुमानी फरमाई है कि कौन सी चीज हलाल है और कौन सी चीज हराम, इस लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत भी जरूरी है, लिहाजा शरीअत के तमाम मामलात में सिर्फ अल्लाह और उसके रूस की इताअत जरूरी है। हर मुसलमान का फर्ज है कि वह सिर्फ सुन्न व सुन्नत की ताबेदारी करे, जो शख्स रसूल के बजाए किसी और की इताअत करने का कायल हो उसको मुस्तकिल बिज्जात मुताअ समझता हो वह यकीनन दायरा-ए-इसलाम से बाहर है, लिहाजा हर मुसलमान के लिए जरूरी है कि वह कुरान व सुन्नत के अहकाम की इताअत करे, लेकिन कुरान व सुन्नत में बाज अहकाम तो वह हैं जिन्हें हर मास्ती पढ़ा लिखा आदमी समझ सकता है, उनमें कोई इजमाल या इबहाम या तआरुज नहीं, जो शख्स भी देखेगा वह समझ लेगा और उसे कोई उलझन पेश नहीं आएगी। इससके बरखिलाफ कुरान व सुन्नत में बहुत से अहकाम ऐसे हैं जिनमें किसी कदर इबहाम या इजमाल है और कुछ ऐसे भी हैं कि कुक्कान की किसी दूसरी आयत या किसी हदीस से बजाहिर मुताआरिज हैं, ऐसे जगहों पर कुरान व हदीस से अहकाम का इस्तिंबात करना नेहायत दिक्कत तलब और दुश्वार है।

अब दो सूरतें हो सकती हैं, एक यह कि हम अपने नाकिस इल्म, कोताह फहम और नाम निहाद बसीरत पर एतेमाद करके इस किस्म के मामलात में खुद कोई फैसला कर लें और इस पर अमल करें, और दूसरी सूरत यह है कि इस किस्म के मामलात में अपने फैसला करने के बजाए हम यह देखें कि कुरान व सुन्नत के इन इरशादात से हमारे असलाफ ने क्या समझा है, करने उला के जिन बुजुर्गों ने अपनी पूरी पूरी जिन्दगी सर्फ करके मसाइल का इस्तिबात किया उनमें से जिन्हें हम उल्लेख कुरान व हदीस का ज्यादा माहिर देखें उनकी फहम व बसीरत पर एतेमाद करें और उन्होंने जो कुछ समझा है उसके मुताबिक अमल करें। गायरे नजर से देखने के बाद इस बारे में दो रायें नहीं हो सकतीं कि उन दोनों सूरतों में पहली सूरत हर जीहोश के नजदीक नेहायत खतरनाक है और दूसरी सूरत बहुत मुहतात। इससे भी किसी को इंकार नहीं हो सकता कि इल्म व फहम, दीन व दियानत, तकवा और परहेजगारी हर एतेबार से हम इस कदर कमजोर हैं कि करने उला के फुकहा व उलमा से हमारा कोई मुकाबला नहीं, फिर भी जिस मुबारक दौर और मुकद्दस माहौल में कुरान नाजिल हुआ था करने उला के फुकहा व उलमा इससे भी करीब तर थे और इस कुर्बे जमानी और सहाबा व ताबेईन से इस्तिफादा की बिना पर उनके लिए कुरान व सुन्नत की मुराद को समझना ज्यादा आसान था, उसके बरखिलाफ हम अहदे रिसालत से इतनी दूर हैं कि हमारे लिए उस जमाने के तरजे मुशाशिरत और तरजे गुफतगु का जैसा चाहे तसौव्वर भी मुश्किल और दुश्वार है, क्योंकि किसी शख्स या किसी दौर की बात समझने के लिए उसके पूरे पसे मंजर का सामने होना जरूरी होता है। इन तमाम बातों का



लिहाज करते हुए अगर हम अपने फहम पर एतेमाद करने के बजाए मुख्तलिफ ताबीर और पेचीदा मामलात में इसी मतलब को दुस्त करार दें जो हमारे असलाफ में से किसी मुमताज आलिम ने समझा है तो कहा जाएगा कि हमने फलां आदमी की तकलीद की। इस बात से यह बात भी वाजेह हो गई कि किसी इमाम या मुजतहिद की तकलीद सिर्फ इस मौका पर की जाती है जहां कुलान व सुन्नत से किसी हुकुम के समझने में इजमाल या इबहाम या किसी तआरूज की वजह से कोई उलझन या दुश्वारी हो और जहां इस किसम की कोई उलझन या दुश्वारी न हो वहां किसी इमाम और मुजतहिद की तकलीद जरूरी नहीं, नीज मजकूरा बाला गुजारिशात से यह बात भी साफ हो जाती है कि किसी इमाम व मुजतहिद की तकलीद का मतलब यह है कि पैरवी तो कुरान व सुन्नत की है, महज मुराद समझने के लिए बहैसियत शारेह कानून उनकी तशरीह और ताबीर पर एतेमाद किया गया है। अब आप खुद फैसला कीजिए कि इस अमल में कौन-सी बात ऐसी है जिसे गुनाह या शिर्क कहा जाए, हां अगर कोई शख्स किसी इमाम को शारेह का दरजा दे कर उसे वाजिबुल इत्तिबा करार देता हो तो बिना शुबहा उसे शिर्क कहा जा सकता है, लेकिन किसी को शारेह कानून करार दे कर अपने मुकाबला में उसकी फहम व बसीरत पर एतेमाद करना तो इफलासे इल्म के इस दौर में इस कदर नागुजीर है कि उससे कोई भाग नहीं सकता, पस तकलीदे अइम्मा मुजतहेदीन का असल मकसद दीन की हिफाजत और कुरान व हदीस पर आसानी से अमल करना है।

## इजतिहाद और तकलीद की ज़रूरत

शरीअते इस्लामिया में फरूई और जुजई मसाइल दो तरह के हैं, एक वह मसाइल जिनका सबूत ऐसी आयाते कुरानिया और अहादीसे सहीहा से सराहतन मिलता है जिन में बज़ाहिर कोई तआरूज़ नहीं और इन मसाइल पर उनकी दलालत कतई है, इस किसम के मसाइल को मंसूसा गैर मुतआरिज़ा कहते हैं, और ऐसे मसाइल में इजतिहाद की कतअन ज़रूरत नहीं होती और न मुजतहिद इस किसम के मसाइल में इजतिहाद करता है, क्योंकि मुजतहिद के लिए यह शर्त है कि वह हुकुम सराहतन मंसूस न हो। जब इन मसाइल में इजतिहाद की गुंजाइश नहीं तो इनमें किसी मुजतहिद की तकलीद की भी ज़रूरत नहीं है, बल्कि ऐसे मसाइल में उन अहकाम पर अमल किया जाएगा जो आयात व अहादीस से सराहतन साबित हैं। दूसरे वह मसाइल जिनका सबूत सराहतन किसी आयत या हदीसे सही से नहीं, या सबूत तो है मगर इस आयत या हदीस में बहुत से मानी का इहतिमाल होने की वजह से कतई तौर पर किसी एक मानी पर महमूल नहीं किया जा सकता, या वह किसी दूसरी आयत या हदीस से बज़ाहिर मुआरिज़ है, इस किसम के मसाइल को इजतिहाद गैर मंसूसा कहा जाता है, इस किसम के मसाइल में इजतिहाद की ज़रूरत होगी और उनका सही हुकुम मुजतहिद के इजतिहाद से मालूम हो सकेगा और यही वह मसाइल हैं जिन में गैर मुजतहिद को तकलीद की ज़रूरत वाक़े होती है। अब चूंकि शरीअते इस्लामिया के तमाम जुजई मसाइल मंसूस नहीं हैं कि हर कस नाकस उनका सही हुकुम समझ सके, बल्कि बहुत से मसाइल इजतिहादी हैं जिनमें इजतिहाद की ज़रूरत है, पस अल्लाह तआला ने अपने फज़ल व

करम से उम्मत के मख्सूस अफराद को वह कुव्वते इजतिहाद अता फरमाई कि वह हज़रात कुरान व हदीस में गौर व फिक्र करके उन जुज़ई मसाइल के अहकाम मुस्तंबत करें जिनका सराहतन जिक्र नहीं है और आम लोगों के लिए अमल की राह आसान कर दें। हज़रात सहाबा-ए-कराम जिनको हम वक्त दरबारे नबवी में हाजिरी का शर्फ हासिल था उनको तो इस कुव्वते इजतिहाद से काम लेने की मुतलक ज़रूरत न थी क्योंकि उनको दरबारे नबवी से तमाम मसाइल मालूम हो जाते थे लेकिन सहाबा-ए-कराम की वह जमाअत जो मदीनतुर रसूल से बाहर किसी मकाम पर रहते थे या वह लोग जो बाद में हलका बगोश इसलाम होने वाले थे उनको इस कुव्वत इजतिहाद की शदीद ज़रूरत थी, क्योंकि ऐसे मसाइल इजतिहादिया में शरीअते इस्लामिया पर पूरे तौर पर अमल करना बेगैर इजतिहाद के गैर मुमकिन था, पस अल्लाह तआला ने खैरूल करून में बेशुमार सहाबा-ए-कराम, ताबेईन व तबेतबाईन और उनमे बाद हम को इस दौलते इजतिहादिया से नवाज़ा और खुद हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ बिन जबल को यमन रवाना करते वक्त साफ और वाजेह लफ्जों में इजतिहाद की तहसीन और तसवीब फरमाई।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ी अल्लाहु अन्हु को यमन का काज़ी बना कर रवाना फरमाया तो यह पूछा कि अगर कोई मामला पेश आ जाए तो किस तरह फैसला करोगे? अरज़ किया गया किताबुल्लाह के मुवाफिक़ फैसला करूंगा, फरमाया कि अगर वह मसअला किताबुल्लाह में न हो तो? अरज़ किया कि रसूल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

सुन्नत से फैसला करूंगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर उसमें भी न मिले? अरज़ किया उस वक्त इजतिहाद व इस्तिंबात करके अपनी राय से फैसला करूंगा और तलाश में कोई कमी न छोड़ूंगा। हज़रत मआज बिन जबल फरमाते हैं कि आपने इस पर (खुशी से) अपना दस्ते मुबारक मेरे सीना पर मारा कि अल्लाह का शुक्र है उसके अपने रसूल के कासिद को इस बात की तौफीक दी जिस पर अल्लाह का रसूल राज़ी और खुश है। (अबु दाउद, तिरमीज़ी, व दारमी) गौर फरमाइये कि यह वाक्या तकलीद और इजतिहाद दोनों मसलों के लिए शमा हिदायत है, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहले यमन के लिए अपने फुकहा सहाबा में से सिर्फ एक जलुल्ल कदर सहाबी को भेजा और उन्हें हाकिम व काजी, मुअल्लिम व मुजतहिद बना कर अहले यमन पर लाजिम कर दिया कि वह उनकी ताबेदारी करे, उन्हें सिर्फ कुरान व सुन्नत ही नहीं बल्कि कयास व इजतिहाद के मुताबिक भी फतवा सादिर करने की इजाज़त अता फरमाई, इसका साफ मतलब यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहले यमन को उनकी तकलीद शख्सी की इजाज़त दी बल्कि उसको उनके लिए लाजिम फरमाया।

### अहदे सहाबा व ताबेईन में तकलीद

बर्रे सगीर की अज़ीम इल्मी शख्सीयत हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिसे दिल्ली (1703-1762 ई.) ने तकलीद के मसअला पर बड़ी बसीरत अफरोज़ रौशनी डाली है और चूंकि हज़रात गैर मुकल्लेदीन तकलीद की मुखालफत करने में अक्सर व बेशतर (गलत तौर पर)

उनका कलाम पेश करके अवाम को गलत फहमी में मुबतला करते हैं, इस लिए इस मौका पर हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस दिल्ली ही ने इस मसअला की जो वज़ाहत फरमाई है उसको बयान करना मुनासिब समझता हूँ। हज़रत शाह वलीउल्लाह जिन को न सिर्फ हिन्द व पाक के तमाम मकातिबे फिक्र अपना बुज़रूग तसलीम करते हैं बल्कि अरब व अजम में भी एक बुलंद मक़ाम हासिल किए हुए हैं। मौसूफ की किताबें पूरी दुनिया में बड़ी क़दर की निगाह से देखी जाती है। मौसूफ की एक किताब (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा) तो इब्तिदा-ए-इसलाम से अब तक तहरीर करदा तमाम किताबों में एक इमतिyaz़ी मक़ाम रखती है। बर्रें सगीर के तमाम मकातिबे फिक्र हज़रत शाह वलीउल्लाह से अपना इल्मी रिश्ता जोड़ कर अपने मक़तबे फिक्र के हक होने का दावा करते हैं। उम्मी तौर पर बर्रें सगीर में हदीस की सनद मौसूफ से ही हो कर हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचती है।

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस दिल्ली फरमाते हैं कि हज़रात सहाबा और ताबेईने एज़ाम के अहदे ज़माना में यह रिवाज था कि जब किसी को कोई मसअला दरपेश होता और इस मसअला में वह खुद कोई फैसला न कर सकता तो वह किसी भी साहबे बसीरत आलिम की तरफ रुजू करता और उससे दरयाफ़्त करके अमल कर लेता था। क्योंकि सहाबा-ए-कराम से लेकर चार मज़ाहिब के जुहूर तक यही दस्तूर और रिवाज रहा कि कोई आलिम मुजतहिद मिल जाता तो उसी की तक्लीद कर लेते थे, किसी भी मोतबर आदमी ने इस पर मना नहीं की, अगर यह (तक्लीद) बातिल होती तो वह हज़रात इस पर ज़रूर मना फरमाते। (अक़दुल मजीद जिल्द 22)

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस दिल्ली के नज़दीक मुकल्लिद का अपने इमाम को तमाम अइम्मा पर फज़ीलत देना तकलीद इमाम के लिए ज़रूरी नहीं है, चुनांचे फरमाते हैं इस एतेराज का जवाब यह दिया गया है कि तकलीद के सही होने में यह एतेकाद रखना बिल इजमा ज़रूरी नहीं कि मेरा इमाम बाकी और अइम्मा पर फज़ीलत रखता है, इस लिए सहाबा-ए-कराम और ताबेईन यह अकीदा रखते थे कि तमाम उम्मत में अफज़ल तरीन अबूबकर और फिर उमर हैं, उसके बावजूद बहुत से मसाइल में उन दोनों हज़रात की राय के खिलाफ दूसरे सहाबा की तकलीद करते थे और इस पर किसी ने एतेराज नहीं किया, लिहाज़ा यह मसअला इजमाई है। (इकदुल जीद जिल्द 76)

सहाबा-ए-कराम और ताबेईन का ज़माना चूंकि ज़माना नबुव्वत से करीब तर था, इस वजह से वह बहरे हाल खैर व बरकत और खुलूस व लिल्लाहियत का ज़माना था, इसमें तकलीद गैर शख्सी के अन्दर किसी किस्म के बड़े नुक़सान का गुमान नहीं हो सकता था। दूसरे यह कि उस ज़माना में इल्म फ़िक़ह की तदवीन भी अमल में नहीं आई थी, लेकिन हज़रात ताबेईन के बाद का ज़माना चूंकि ज़माना नबुव्वत से बर्द हो चुका था, आम तौर पर तबीअत भी पहले से मुख्तलिफ हो गई थीं, इसलिए तकलीद की मौजूदा वुसअतों को तकलीद शख्सी में महूद करना नागुज़ीर था, वरना मफासिद का दरवाज़ा खुल जाता और अहकाम शरा बच्चों का खेल बन कर रह जाते, चुनांचे दूसरी सदी हिजरी के इख़िताम पर अइम्मा मुजतहेदीन के तफक्कुहात किताबी शकल में मुव्वन होना शुरू हो गए, जिन लोगों को तदवीन शुदा मज़ाहिब मुयस्सर आए उन्होंने उसी मज़हब

की पैरवी कर ली और तकलीद शख्सी इख्तियार की, अलबत्ता जिन को वह मज़ाहिब मुयस्सर न हो सके वह उस ज़माना में भी बदरजा मजबूरी तकलीद गैर शख्सी ही करते रहे हल्ता कि उनको कोई मज़हब दस्तियाब हो गया। इस बारे में हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस दिल्ली फरमाते हैं और दूसरी सदी के बाद लोगों में मुतऐयन मुजतहिद की पैरवी का रिवाज हुआ और बहुत कम लोग ऐसे थे जो किसी खास मुजतहिद के मज़हब पर एतेमाद न करते हों और इस ज़माना में यही ज़रूरी था। (अल इंसाफ पेज 4) इश्तिगाल फिल फिक्ह की तफसील करते हुए हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस दिल्ली फरमाते हैं अल हासिल उन मुत्तहेदीन का साहबे मज़हब होना और फिर लोगों का उनको इख्तियार करना यह एक राज है जिसको अल्लाह तआला ने उन पर इलहाम किया और उनको इसपर मुजतमा कर दिया चाहे उसको जाने या न जानें। (अल इंसाफ पेज 67)

हज़रत शाह फरमाते हैं कि तकलीद शख्सी का रिवाज गो दूसरी सदी हिज़री के बाद हो गया था मगर कुछ लोग ऐसे भी थे जो तकलीद गैर शख्सी पर आमिल थे और इस को उन्होंने बिल्कुल्लिया तरक नहीं किया था, फरमाते हैं जानना चाहिए कि चौथी सदी हिज़्री से पहले तमाम लोग मुतऐयन तौर पर किसी मज़हब खास की पैरवी (यानी तकलीद शख्सी) पर मुत्तफिक नहीं हुए थे। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा पेज 12, जिल्द 1)

### **अइम्मा अरबा की तकलीद**

जब इमाम आजम अबू हनीफा, इमाम मालिक, इमाम शाफई और इमाम अहमद बिन हम्बल रहमुतल्लाह अलैहिम का फिक्ह किताबी

शकल में तैयार हो कर तमाम मुस्लामिके इस्लामिया में फैल गया और आम तौर पर रायज हो गया तब इन्ही मज़ाहिबे अरबा में तकलीद का इंहिसार हो गया और फिर तकलीद शख्सी के सिलसिला में किसी को भी इख्तिलाफ न रहा बल्कि उसके खिलाफ करने को सवादे आजम से फरार व इंहिराफ के मुतरादिफ समझा जाने लगा जो बड़ा गुनाह है। हज़रत शाह फरमाते हैं कि जब बजुज़ मज़ाहिबे अरबा के और सारे मज़ाहिब हक्का खत्म हो गए तब इन्ही मज़ाहिबे अरबा का इत्तिबा सवादे आजम का इत्तिबा करार पाया और इन चारों मज़ाहिब से निकलना सवादे आजम से निकलने के मुरादिफ ठहरा। (इकदुलजीद पेज 38) और हज़रत शाह साहब उसकी वजह यह बयान फरमाते हैं कि उन मज़ाहिबे अरबा में तकलीद शख्सी के इंहिसार और ज्वाज़े तकलीद पर इजमा उम्मत है और यह कवी तरीन दलील है, फरमाते हैं तमाम उम्मत ने या उम्मत के क़बिले लिहाज़ अफराद ने उन मज़ाहिबे अरबा मशहूरा की तकलीद के ज्वाज़ पर इजमा कर लिया है जो आज तक जारी है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा पेज 23, ज़िलद 1) और फरमाते हैं और इसमें बूह सी मसलिहतें हैं जो पोशिदा नहीं हैं बिलुसूख इस ज़माना में कि हिम्मतें पस्त हो गई हैं और नुफूस में खाहिशात का गलबा और हर राय वाला अपनी राय पर मगरूर है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा) फिर आगे चल कर तकलीद शख्सी पर लान तान करने वालो पर सख्त तंकीद फरमाते हैं अल्लामा इबने हज़म ने जो राय कायम की है कि तकलीद हराम है और सिवाए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी और का कौल लेना हलाल नहीं, यह एक बेदलील बात है। (हुज्जतुल्लाहिल बालिगा)



तकलीद के बारे में हज़रत शाह साहब का नज़रिया यह था कि आर बिल फरज़ कोई शख्स किसी ऐसे मुल्क में ठहरा हो जहां किसी दूसरे मज़हब का कोई आलिम या उसकी किताबें मौजूद न हों तो उसको मुरव्वजा मज़हबे हनफिया की तकलीद करना ज़रूरी है, इसी में खै है, फरमाते हैं जब कोई शख्स हिन्दुस्तान या उसके आस पास में ठहरा हो जहां कोई शाफई, मालकी और हम्बली आलिम न हो और न उन मज़ाहिब की किताबें ही मुयस्सर आ सकती हों तो उस शख्स पर वाजिब है कि वह सिर्फ़ इमाम अबू हनीफा की तकलीद करे, उनके मज़हब से अलग होना उसके लिए हराम है, क्योंकि उससे अलग होने की सूरत में वह शरीअत की रस्सी अपनी गर्दन से उतार फेंकेगा और फिर यही आज़ाद फिरता फिरेगा। (अल इंसाफ)

हज़रत शाह साहब ऐसे शख्स को कतअन नापसन्द फरमाते थे जो मुहद्दीसीन और फुक़हा से किनारा कश हो जाए, अपनी किताब अल इंसाफ में फरमाते हैं कि जो शख्स ऐसे ख़िया-ए-कराम से जो आलिमे शरीअत भी हों और ऐसे उलमा से जो सूफी हों या मुहद्दीसीन से जिनको अहादीसे नबविया से वाफिर हिस्सा मिला हो और ऐसे फुक़हा से जिनको फिक़ह से गहरा तअल्लुक़ हो तअल्लुक़ खत्म करे वह शख्स हमारे गिरोह से नहीं है।

अल्लामा इबने खलदून (1332-1406ई.) मुकद्दमा तारीख में लिखते हैं दियार व अमसार में उन ही अइम्मा अरबा में तकलीद मुंहसिर हो गई और उनके सिवा जो इमाम थे उनके मुकल्लिद नापैद हो गए और लोगों ने इख़्तिलाफ़ात के दरवाज़े और रास्ते बन्द कर दिए और चूँकि इस्तिलाहाते इल्मिया मुख्तलिफ़ हो गई और लोग मरतबा इजतिहाद तक पहुंचने से रह गए और इस अमर का अंदेशा पैदा

हुआ कि इजतिहाद के मैदान में कहीं ऐसे लोग न कूद पड़े जो न तो उसके अहल हैं और न उनका दीन और उनकी राय काबिल व वसूक है, लिहाज़ा उलमा-ए-ज़माना में जो मोहतात थे उन्होंने इजतिहाद से अपना इज्ज ज़ाहिर कर दिया और उसके दुश्वार होने की तसरीह फरमा दी और उन ही अइम्मा मुजतहेदीन की तकलीद के लिए जिन के लोग मुकल्लिद हो रहे थे हिदायत और रहनुमाई करने लगे और चूंकि तदावुल तकलीद में तलाउब है यानी इस तरह तकलीद करने में कि कभी एक इमाम और कभी दूसरे इमाम की तरफ रुजू करने में दीन खिलौना बन जाता, इस लिए इस तरह की तकलीद करने से लोगों को मना करने लगे और एक ही इमाम की तकलीद करने पर जोर देने लगे और सिर्फ़ नक़ल मज़हब बाकी रह गया और बाद तसही असूल व इत्तिस्ल सनद बिर रिवाया हर मुकल्लिद अपने अपने इमाम मुजतहिद की तकलीद करने लगा और फ़िक़ह से आज बजुज़ इस अमर के कुछ और मतलब नहीं और फी ज़माना मुद्दई इजतिहाद मरदुद और उसकी तकलीद महज़ूर और मतरूक है और अहले इसलाम उन्हें अइम्मा अरबा की तकलीद पर मुस्तकीम हो गए हैं।

### **मज़ाहिबे अरबा में तकलीद शख़सी का इंहिसार फ़ज़ले रब्बानी<sup>१६</sup>ह**

मसाइल इजतिहादिया ग़ैर मंसूसा में मुजतहिद से किसी भी सूरत में इस्तिगना नहीं हो सकता और अइम्मा अरबा के मासिवा बाकी तमाम मज़ाहिब जिन में मज़ाहिबे हक्कुह भी थे चौथी सदी हिजरी तक ख़त्म हो गए और आने वाले लोगों में मुजतहिद बनने की उम्मीद भी बाकी नहीं रही तो अब सिर्फ़ दो ही सूतें थीं, या तो लोग

अपने अपने खयालात को काफी समझ कर उस पर अमल करते या अइम्मा अरबा की तकलीद इख्तियार करते और अपने आपको इत्तिबा-ए-हवा से महफुज़ रखते, पस अल्लाह तआला ने अपने फज़ल व करम से लोगों में अइम्मा अरबा की तकलीद शख्सी की मुहब्बत पैदा कर दी। हरज़त शाह साहब अपनी किताब अल इंसाफ में फरमाते हैं अइम्मा मुजतहेदीन के मज़ाहिब का पाबन्द होना एक राजे खुदावंदी है जिसको अल्लाह तआला ने उलमा के दिलों में इलहाम फरमाया है और इस पर उनको जमा कर दिया है वह समझें या न समझें। दूसरी जगह फरमाते हैं मुजतहेदीन की चौथी अलामत यह है कि उनके लिए क़बूलियत आसमान से नाजिल हो (इस तौर पर) कि उनके इल्म की तरफ उलमा, मुफस्सेरीन, मुहद्दिसीन और अरबाबे असूल व हुफ्फाज़े कुतुब हदीस व फिक़ह गिरोह दर गिरोह मायल हो जायें और इस मक़बूलियत और उलमा की तवज्जोह पर ज़मानाहाय दराज़ गुजर जायें कि यह क़बूलियत दिलों की तह में बैठ जाए, सो अलहमदु लिल्लाह यह अलामत अइम्मा अरबा में पूरी तरह पाई जाती है, लिहाज़ा मज़ाहिबे अरबा इंदल्लाह मक़बूल हैं।

### तकलीदे शख्सी का वजूब

इस बेदीनी, कम अकली और नफस प्रस्ती के दौर में तकलीदे शख्सी ज़रूरी है, इससे किसी भी साहबे फहम और सलीमुत तबा आदमी को क़तअन इंकार नहीं हो सकता। तकलीद के वजूब और उसकी ज़रूरत को समझने के लिए पहले वजूब के मानी समझ लेना चाहिए, किसी चीज़ के वाजिब होने की दो सूरतें होती हैं, एक यह कि सुन्न व हदीस में ख़ूबसियत के साथ उसकी ताकीद फरमाई गई हो जैसे

नमाज़ व रोजा वगैरह, इस तरह के वजूब को वजूब बिज्जात कहते हैं, वजूब की दूसरी सूरत यह है कि उस अमर की खुद तो सराहतन ताक़ीद नहीं की गई है मगर जिन उमूर की कुरान व हदीस में ताक़ीद की गई है उन पर अमल करना इस अमर के बेगैर मुमकिन न हो इस लिए इसको भी ज़रूरी और वाजिब कहा जाएगा, क्योंकि यह एक मशहूर असूल है कि (वाजिब का मुकद्दमा भी वाजिब होता है) यानी जिस चीज़ पर किसी वाजिब का दार व मदार हो वह खुद भी वाजिब होती है, मसलन कुरान व हदीस की तदवीन और किताबत। शरीअत में कहीं भी कुरान व हदीस को यकजा करने और उनको तहरीरी शकल में लाने का सराहतन कुम मौजूद नहीं है, लेकिन चूंकि कुरान व हदीस को महफूज़ रखना और उसको बरबाद होने से बचाना एक शरई फरीज़ा है जिसकी बार बार ताक़ीद की गई है और तजुर्बा शाहिद है कि बेगैर किताबत के आदतन उनकी हिफाज़त नामुमकिन थी, इस लिए कुरान व हदीस के लिखने को ज़रूरी और वाजिब समझा गया, यही वजह है कि दलालतन इस पर उम्मत का इत्तिफाक चला आ रहा है, इस तरह के वजूब को वजूब बिलगैर कहते हैं।

### अइम्मा हदीस मुक़ल्लिद थे

तक़लीद से कोई ज़माना खाली न रहा, इब्तिदाई दौर में लोग जिस आलिम को मुतदययिन पाते उसकी तक़लीद कर लेते, फिर मज़कूरा बाला मसालेह की बिना पर हामयाने इसलाम ने इमाम मुतएयन की तक़लीद मुकर्रर कर दी और लोगों को मुतलकुल इनानी से बाज़ रखा, इसके बाद आहिस्ता आहिस्ता तमाम मज़ाहिब अहले सुन्नत खत्म

हो गए और सिर्फ मज़ाहिब अरबा बाकी रह गए तब जम्हू मुसलमान उन्हीं की तकलीद पर मुत्तफिक हो गए हत्ता कि अकाबिर मुहद्दीसीन भी दायरा तकलीद से बाहर नहीं रहे। तफसील जैल से आपको मालूम होगा कि तमाम अइम्मा हदीस ने अइम्मा अरबा में से किसी न किसी इमाम मुजतहिद की तकलीद का कलादा अपनी गर्दन में डाला है और वह मुकल्लिद रहे हैं, चूनांचे उनमें से बाज़ मुहद्दीसीन के बारे में कुछ तफसील पेश है।

**इमाम बुखारी-** मोहम्मद बिन इसमाइल बुखारी, साहबे बुखारी वफात 256 हिजरी शाफी उल मज़हब हैं, उन्होंने अपने उस्ताद हमिदीसे हासिल किया जो शाफइ उल मज़हब हैं, इमाम बुखारी के शाफइ उल मज़हब होने को बक्सरत उलमा-ए-मुहक्केकीन ने बयान किया है, नीज़ हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दीस दिल्ली ने अपनी किताब “अल इंसाफ” में जिक्र किया है, फरमाते हैं “इमाम बुखारी बहुत से मसाइल में शाफइ उल मज़हब हैं और वह मसाइल हैं जिनमें उनको मरतबा इजतिहाद हासिल था, उनमें उन्होंने इमाम शाफइकी मुखालिफत की है”।

**इमाम मुस्लिम-** हाफिज़ुल हदीस इमाम अबु हुसैन कशीरी साहबे मुस्लिम (वफात 261 हिजरी) शाफी उल मज़हब हैं जैसा कि साहबे कशफुज़ ज़नून और हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब ने “अल इंसाफ” में और बहुत मुहक्केकीन ने जिक्र किया है।

इमाम अबु दाउद- सुलैमान बिन अशअस सजिस्तानी साहब सुनन अबु दाउद (वफात 261 हिजरी) हम्बली मज़हब हैं, इसको तारीख़ इबने खलकान और हज़रत शाह वलीउल्लाह ने “अल इंसाफ” में जिक्र फरमाया है और हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ ने अपनी किताब

“बुस्तानुल मुहद्दीसीन” में लिखा है कि इमाम अबु दाउद के मज़हब के बारे में इख्तिलाफ है। बाज़ उनको शाफ़ि कहते हैं और बाज़ हम्बली।

**इमाम तिरमीज़ी-** अबु ईसा बिन अत्तिरमीज़ी, साहबे जामे तिरमीज़ी (वफात 269 हिजरी) के मुतअल्लिक हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब “अल इंसाफ” में लिखते हैं कि यह हनफी मज़हब हैं और इमाम इसहाक बिन राहविया की तरफ भी मुंतसिब हैं और बाज़ अहले तहकीक ने उनको शाफी उल मज़हब कहा है।

**इबने माज़ा-** (वफात 253 हिजरी), दारमी (वफात 255 हिजरी) दोनों हज़रात हम्बली उल मज़हब हैं और इमाम इसहाक बिन राहविया की तरफ भी मुंतसिब हैं जैसा कि “अल इंसाफ” में हज़रत शाह साहब ने जिक्र फरमाया है।

**इमाम अब्दुर रहमान अहमद नसई-** (वफात 303 हिजरी) साहबे सुनन नसई शाफ़ि उल मज़हब हैं जैसा कि उनकी किताब “मंसक” इस पर दलालत करती है और हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ ने “बुस्तानुल मुहद्दीसीन” में जिक्र फरमाया है और “जामे उल असूल” में है। नीज़ शैख अब्दुल हक़ मुहद्दीस दिल्ली ने “शरह सफरूस सादात” में भी इसको बयान किया है।

**लैस बिन साद-** (वफात 174 हिजरी), इमाम बुखारी के उस्ताद और तबेताबेईन में से हैं, हनफी उल मज़हब हैं, अल्लामा किस्तलानी ने इबने खलकान से नक़ल किया है और साहबुल जवाहिरुल मजीया ने अपनी किताब में और अल्लामा ऐनी ने “उम्दतुल कारी शरह बुखारी” में लिखा है।

**इमाम अबु यूसूफ-** याकूब बिन इब्राहिम अंसारी (वफात 183 हिजरी)

शागिर्द इमाम आज़म अबू हनीफा हनफी उल मज़हब हैं, तारीख़ इबने खलकान में है कि उन पर मज़हब अबी हनीफा गालिब था, हां ब्रुत से मकामात पर उनकी मुखालफत भी की है, यानी जिन मसाइल में उनको मरतबा इजतिहाद हासिल था सिर्फ़ उनमें मुखालफत की है।

**इमाम मोहम्मद बिन हसन अश शैबानी-** (वफात 187 हिजरी) शागिर्द इमाम आज़म व इमाम अबु यूसूफ, हनफी उल मज़हब हैं, उन्होंने सिर्फ़ उन मसाइल में इमाम अबूहनीफा की मुखालफत की है जिनमें उनको मरतबा इजतिहाद हासिल था, उनके हनफी उल मज़हब होने की तसरीह साहब कशफुज़ ज़नून और इबने खलकान वगैरह ने पूरे तौर पर की है।

इसी तरह चौथी सदी हिजरी के बाद जो किबारे मुहद्दीसीन हुए हैं उनके हालात की तफतीश की जाए तो वह भी उन मजाहिबे अरबा से खाली न मिलेंगे, मुस्नाहिज़ा फरमाएँ- हाफिज़ जैलई, अल्लामा ऐनी, मुहक्किक इबने हुमाम, मुल्ला अली कारी वगैरहुम जो अलावा फिक़हा के इल्मे हदीस में भी तजुर्बा रखते थे यह सब हनफी उल मज़हब थे, अल्लामा इबने अब्दुल बर जैसे मुहद्दिस मालकी उल मज़हब हैं, अल्लामा नवी, अल्लामा बगवी, अल्लामा ख़ताबी, अल्लामा ज़हबी, अल्लामा असकलानी, किसतलानी, अल्लामा स्यूती वगैरहुम जिनका फन हदीस में डंका बजता था शाफील उल मज़हब थे और इसी तरह बहुत से उलमा व मुहद्दीसीन हम्बली उल मज़हब हुए हैं, अल्लामा इबने तैमिया और हाफिज़ इबने कैयिम यह दोनों हज़रात हम्बली थे।

## हज़रत इमाम अबू हनीफा की तकलीद और उसका फैलाओ

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद आपके सहाबा-ए-कराम मुख्तलिफ कसबात और शहरों में गए और मुख्तलिफ मकामात पर ठहरे, इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुताबिक "मेरे असहाब सितारों की तरह हैं, जिसकी भी पैरवी कोगे हिदायत पा जाओगे" तमाम सहाबा अपने अपने मकाम पर मुक़तदी और मतबू करार पाए। इसी तरह ताबेईन अपने अपने इलाकों के इमाम बने और लोगों ने उनकी तकलीद की। 80 हिजरी में हज़रत इमाम अबू हनीफा (नोमान बिन साबित) कुफा में और 95 हिजरी में हज़रत इमाम मालिक मदीना में पैदा हुए, इराकियों ने इमाम अबू हनीफा को अपना इमाम तसलीम किया हेजाजियों ने इमाम मालिक को अपना मुक़तदा और पेशवा करार दिया। 150 हिजरी में मक़ाम गज्जा (फिलिस्तीन) इमाम शाफी की विलादत हुई, आप मरतबा इजतिहाद को पहुंचे और बहुत से लोग उनके मुक़ल्लिद हो गए। 194 हिजरी में इमाम अहमद बिन हम्बल शहर बुगदाद में पैदा हुए, बहुत बड़े मुहद्दिस और इमाम मुजतहिद हुए, बहुत से लोगों ने उनकी तकलीद इख्तियार की, अगरचे उन अइम्मा अरबा के ज़माना में और उनके बाद और भी बड़े बड़े मुजतहिद थे और उनके भी लोग मुक़ल्लिद थे मगर अल्लाह की मर्जी से उन अइम्मा अरबा के मुक़ल्लेदीन रोज़ बरोज़ बढ़ते गए, नीज़ उनके मसाइल इजतिहादिया किताबों में मुदौविन हो गए, बिल खोसूस इमाम आज़म अबू हनीफा के शागिद इमाम अबु यूसूफ, इमाम मोहम्मद और इमाम जुफर ने हदीस व फिक्ह में बुह्रा सी किताबें तसनीफ व तालिफ फरमाईं जिनमें इमाम आज़म के मसाइल फकीहा को पूरा वजाहत के साथ



बयान फरमाया, हत्ता कि खुद इमाम हुमाम ने भी किताबें लिखी जैसा कि अल्लामा कौसरी ने “बलूगूल अमानी” के हाशिया पेज 18 पर लिखा है कि मुतकद्दिमीन की मुअल्लिफात में इमाम साहब की दरजा जैल किताबों का जिक्र मिलता है, किताबुर राय, जिकरोहू इबनुल अवाम, किताब इखितलाफुस सहाबा, जिकरोहू अबु आसिम अल आमरी मसूद बिन शिबा, किताबुस सियर, किताबुल औसत, अकताबुल जामे, जिकरोहूल अब्बास इबने मुसअब फी तारीखे मरौवा, अल फिक्रहुल अकबर, अल फिक्रहुल अबसत, किताबुल आलिम वल मुतअल्लिम, किताबुल रद्द अलल कदरिया, रिसाला इमाम अबी उसमान अल बती फील इरजा, चंद मकातिब बतौर वसाया जो आपने अपने चंद अहबाब को लिखे और यह सब मशहूर हैं। (मुक्क अज़ मुकद्दमा अनवारूल बारी)

दर हकीकत मिल्लते इस्लामिया की मिसाल एक दरख्त तूबा की सी है कि इस दरख्त तूबा से चंद शाखें निकलीं, उनमें से कोई तो एक हाथ बढ़ कर रह गई, कोई दो हाथ और कोई इससे भी ज्यादा बढ़ी, मगर उसकी चार शाखें इतनी बढ़ी और फली फूलीं कि सारे दुनिया में फैल गई और उनमें भी एक शाख का तो वह नशु व नुमा हुआ कि चार दांग आलम में उसने अपना साया डाला और अलग अलग शहरों में अपना रंग जमा लिया, यह बढ़ी शाख मज़हबे हनफीयाकी है कि तीसरी सदी हिजरी ही में सद सिकंदरी तक जो कुहे काफ में हैं पहुंच गया, चूनांचे 248 हिजरी में जबकि खलीफा अब्बासी वासिक बिल्लाह ने कुछ आदमियों को सद सिकंदरी का हाल मालूम करने के लिए भेजा तो वहां के लोगों को हनफी उल मज़हब पाया। तकरीबन एक हजार साल से अहले सुन्नत का 75 फीसद से ज्यादा तबका

इमाम अबू हनीफा की तकलीद करता चला आ रहा है यानी कुरान व हदीस की रौशनी में इमाम अबू हनीफा और उलमा अहनाफ के जरिया बयान करदा अहकाम व मसाइल पर अमल करते चले आ रहे हैं।

### बर्रे सगीर में अदमे तकलीद का आगाज़

बर्रे सगीर में जब से इसलाम ने कदम रखा मुसलमानों की भारी अक्सरीयत बराबर हनफीयूल मज़हब और इमाम आजम अबू हनीफा की मुकल्लिद रही, जब इसलामी हुकुमत का चिराग बुझ गया और हिन्दुस्तान में अंग्रेजी हुकुमत कायम हुई और हुकुमते बरतानिया की तरफ से मज़हबी मामलात से कोई तआरूज़ न रहा तब तेरहवीं सदी हिजरी में जगह जगह कुछ ऐसे लोगों ने नशु व नुमा पाया जो अइम्मा अरबा की तकलीद को महज़ बेअसल समझने लगे, उन्होंने इबने हजम, इबने कैम और काज़ी शौकानी के ख्यालात से वाकफियत हासिल की और अहले ज़वाहिर से भी मुतअस्सिर हुए, बात बात में हनफियों से इख़्तिलाफ करने लगे और मुकल्लेदीन को बिदअती व मुर्शिक बल्कि काफिर तक कहने लगे।

### तकलीद अइम्मा पर किए जाने वाले इतिराजात की हकीकत

अब इन इतिराजात को जेरे बहस लाया जा रहा है जो आम तौर से तकलीद पर किए जाते हैं, मुंकेरीन तकलीद के इतिराजात के जवाबात मुलाहिज़ा फरमाने से पहले एक असूली बात जेहन नशीन करलें।

तकलीद की दो किसमें हैं- तकलीदे मशरू और तकलीदे गैर मशरू।

तकलीदे मशरू ऐसे मसाइले इजतिहादिया में होती है जिनमें शरअन इजतिहाद को दखल है और जिन्हें ऐसे अइम्मा दीन ने कुक़ान व हदीस से इस्तिंबात किया हो तो पूरी तरह इल्मी व फिकही हैसियत से इजतिहाद के अहल हों और जिनका तकवा और सिदक व इखलास भी शक व शुबहा से बालातर हो और उनकी यह सिफात इजतिहाद फीद दीन और इस्तिंबात मसाइल शरईया की अहलियत उम्मत के सवाद आजम के नजदीक मुसल्लम हों, पस तकलीद करने वाले इस तरह के मसाइल में अइम्मा कराम पर गायते एतेमाद की बिना प उनकी तकलीद करते हैं और दर हकीकत यही वह तकलीद है जो मुहतसिन बल्कि वाजिब है जिसका सबूत कुरान व हदीस से, अकाबिरे उम्मत के अमल से और फुकहा मुहद्दिसीन के अकवाल से साबित है और रोज व रौशन की तरह वाजेह है जैसा कि इसपर अहले सेयर हासिल बहस हो चुकी है। तकलीद गैर मशरू इसका नाम है कि ऐसे मसाइल में किसी का इत्तिबा किया जाए जो मूसल्ल हैं और जिनमें शरइअन इजतिहाद का दखल नहीं या उनका इस्तिंबात करने वाला इजतिहाद की अहलियत नहीं रखता, मसलन वह दीनदार या सिरे से मुसलमान ही नहीं या इल्म के उस मरतबा पर पहुंचा नहीं जो इजतिहाद के लिए जरूरी है, इसलिए इस तरह की तकलीद गलत बल्कि हराम है।

इस तफसील पर गौर करने के बाद गैर मुकल्लिदों के तकलीद के मसअला पर हर किसम के शुबहात और इतिराज़ात का इजमाली जवाब निकल आता है, बल्कि उलमा अहले हदीस के तमाम इतिराज़ात और शुबहात महज़ एक मुग़ालता और धोका पर मबनी होने लगते हैं क्योंकि मुकल्लेदीन के मुकाबला में यह लोग दावा तो

करते हैं तकलीद मशरू ममनू होने का और दावा के सबूत में दलायल वह पेश करते हैं जो तकलीद गैर मशरू के रद्द में पेश किए जाने चाहिए, महज तादाद और शुमार बढ़ाने के लिए तो बहुत जिक्र किए जाते हैं मगर उनकी हकीकत और वनज का इतिबार किया जाए तो मालूम होगा कि वह बहुत ही कम हैं इसलिए यहां पर चंद इतिराजात बयान करके जवाबात लिखे जा रहे हैं।

### तकलीद पर किए जाने वाले इतिराजात के जवाबात

**पहला एतेराज़-**कहा जाता है कि सूरह बकरा आयत 170 में तकलीद की मुजम्मत की गई है, जब कुप्फार से कहा जाता है कि पैरवी करो उन अहकाम की जो अल्लाह तआला ने नाजिल फरमाए हैं तो वह जवाब में कहते हैं कि नहीं, हम तो उस रास्ते की पैरवी करें जिनपर हमने अपने बाप दादा को पाया है। (हक तआला बतौर रद्द फरमाता है) क्या हर हालत में अपने बाप दादा की पैरवी करते रहेंगे गो उनके बाप दादा न कुछ दीन को समझते हों और न हक की राह पाते हों।

जवाब- यह एतेराज़ सरासर मुगालिता है क्योंकि जिन लोगों की तकलीद की जाती है वह दो तरह के होते हैं, एक कुप्फार और दुसरे अइम्मा मुजतहेदीन। कुप्फार की तकलीद हराम है और इसी का रद्द अल्लाह तआला ने इस आयत में फरमाया है। अब रही अइम्मा मुजतहेदीन की तकलीद जो आम तौर पर मुसलमानों में रिवाज पजीर है इससे किसी भी आयत या हदीस में मना नहीं किया गया है। नीज चारों अइम्मा की तकलीद कुरान व हदीस की इत्तिबा ही है। गौर फरमाइये इस आयत में अकी इत्तिबा ही है। गौर फरमाइये इस

आयत में अलाह तआला ने बाप दादा की तकलीद की मुजम्मत के दो सबब बयान फरमाए हैं। एक यह है कि वह लोग अल्लाह के नाजिल किए हुए अहकाम को बर मला रद्द करते हैं और उन्हें तसलीम न करने का इलान करते हैं और साफ साफ कहते हैं कि हम उसके बजाए अपने बाप दादा की बात मानेंगे। दूसरे यह कि उनके बुजरूग अकल व हिदायत से बिल्कुल अंधे थे और हम जिस तकलीद की बात कर रहे हैं उसमें यह दोनों सबब नहीं पाये जाते, पहला सबब तो इस तरह नहीं पाया जाता कि कोई भी तकलीद करने वाला (अल्लाह की पनाह) अल्लह और रसूल के अहकाम को रद्द करके किसी इमाम की बात को हरगिज नहीं मानता, बल्कि वह अपने इमाम को कुरान व हदीस की वज़ाहत व शरह करने वाला समझता है, दूसरा सबब भी ज़ाहिर है कि यहां नहीं है, क्योंकि इससे कोई अहले हक इंकार नहीं कर सकता कि मुकल्लेदीन जिन अइम्मा मुजतहेदीन की तकलीद करते हैं उनसे किसी को कितना इख्तिलाफ़ राय क्यों न हो मगर तमाम मुखालेफिन के नज़दीक भी वह हज़रात हर इतिबार से जलीलुल कदर और अजीमुश शान शख्सीयतें हैं, लिहाज़ा अइम्मा की तकलीद को काफिरों की तकलीद पर मुंतबिक करना सरासर जुल्म और हट घरमी है।

**दूसरा एतेराज़-** कहा जाता है कि सूरह तौबा आयत 31 में तकलीद को शिर्क कहा गया है, उन्होंने अपने उलमा और दरवेशों को अन्नह तआला के बजाए अपना प्रवरदिगार बना लिया, इस आयत से मालूम हुआ कि किसी पेशवा के अवामिर व नवाही की इत्तिबा करना शिर्क है, लिहाज़ा अइम्मा मुजतहेदीन की तकलीद शिर्क हुई और तकलीद करने वाले मुशरिक हुए।

जवाब- यहूद व नसारा के रहबान व अहबार महज़ अपनी राय से अहकामे इलाही के खिलाफ लोगों को अच्छी और बुरे कामों का हुकुम दिया करते थे, यानी वह जिस चीज को चाहते ज़रूरी करार देते और जिस को चाहते मना कर देते थे। और लोग उनको मता-ए-मुतलक जान कर उनकी पैरवी करते थे, इसलिए इसको शिरक कहा गया है, लेकिन अइम्मा मुजतहेदीन अपनी जानिब से कोई अमर व नही (अच्छी और बुरी बातों का हुकुम) नहीं करते हैं और न उनको यह हक हासिल है बल्कि वह कुरान व हदीस की रौशनी में बताते हैं कि क्या हलाल है और क्या हराम है?

इसलिए अइम्मा की तकलीद को काफिरों की तकलीद से कोई निसबत नहीं और अइम्मा की तकलीद की मुखालिफत इस आयते करीमा से हरगिज नहीं निकलती।

**तीसरा एतेराज़-** हज़रत इमाम मालिक मुअत्ता में मुरसलन फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया है कि मैंने तुम में दो चीजें छोड़ी हैं जब तकुमतउनपर अमल करोगे हरगिज गुमराह न होगे, एक अल्लाह की किताब और दूसरी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत। इस हदीस में किताबुल्लाह और हदीस को काबिले अमल और गुमराही से बचने का ज़रिया करार देना इस हुकुम की दलील है कि इन दोनों के मासिवा इमाम के मसाइले इजतिहादिया में इसकी तकलीद करना जायज नहीं है।

जवाब- अइम्मा मुजतहेदीन कुरान व हदीस की रौशनी में ही मसाइल का इस्तिबात और इस्तखराज करते हैं, वह तौरैत या जूब या रामायण या गीता से मसाइल नहीं लेते हैं, लिहाज़ा उनके ब्लाए हुए

मसाइल को कबूल करना ऐन कुरान व हदीस की इत्तिबा है।

**चैथा एतेराज़**-हज़रत जाबिर रजी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन खत्ताब रजी अल्लाहु अन्हु एक रोज़ तौरैत का एक नुसखा लेकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और बयान किया कि ऐ रसूले खुदा! यह तौरैत का नुसखा है, आप खामोश रहे, उन्होंने पढ़ना शुरू किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चहरा अनवर से नाराज़गी के आसार नुमाया होने शुरू हो गए (इस हदीस के आखीर में है) कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कसम उस जात की जिसके कब्ज़ा में मोहम्मद की जान है अगर तुम्हारे लिए हज़रत मूसा अलैहिस सलाम जाहिर हो जायें और तुम्हें मुझको छोड़ कर उनकी पैरवी करने लगो तो तुम सीधो रास्ता से बहक जाओगे। (सुन्नन दारमी) इस हदीस से मालूम होता है कि जब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीका छोड़ कर हज़रत मुसा अलैहिस सलाम जैसे पैगम्बर की तकलीद और ताबेदारी जायज़ नहीं तो किसी इमाम या मुजतहिद की तकलीद किस तरह जायज़ और दोरुस्त हो सकती है।

जवाब- हज़रत मूसा अलैहिस सलाम शरीअत मुस्तकिला के पैगम्बर हैं और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत हज़रत मूसा की शरीअत के लिए नासिख है, अगर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माना में हज़रत मूसा की इत्तिबा की जाती तो शरीअत मंसूखा की इत्तिबा करना होती जो शरीअते मोहम्मदिया के इंकार को मुस्तलजिम है और सरीह कुफर है, और अइम्मा मुजतहेदीन की तकलीद में कुरान व हदीस की इत्तिबा ही है, इसलिए कि यह हज़रात हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मीती

हैं, आपके फरमाबरदार हैं, कुरान व हदीस पर अमल करने वाले हैं और हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताबेदारी ही की गर्ज से मसाइल इजतिहादिया का इस्तिंबात करते हैं।

**पांचवा एतेराज़-** सहाबा-ए-कराम और ताबेईने इजाम के ज़माना में तकलीद का वजूद न था, लिहाजा यह तकलीद बिदअत हुई, नीज़ सहाबा अफज़ल उम्मत हैं और अइम्मा अरबा उन मफज़ूल हैं अगर तकलीद जायज़ होती तो बजाए अइम्मा अरबा के सहाबा की तकलीद रायज होती।

जवाब- तआमुल्ले सहाबा व ताबेईन और खैरूल करून के ज़माना में तकलीद का पाया जाना और उसका रिवाज साबित किया जा चुका है, लिहाजा यह कहना कि अहदे सहाबा व ताबेईन में तकलीद न थी सरासर गलत है। अब रहा यह दावा कि अफज़ल के होते हुए मफज़ूल की तकलीद जायज़ है, सिवा उसके मुतअल्लिक हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब की इबारत पेश की जा चुकी है, पहली बात इस तरह रद्द की गई है कि तकलीद के सही होने में बिलइजमा यह इतिकाद रखना जरूरी नहीं है कि (मेरा) इमाम बाकी तमाम अइम्मा पर मुतलकन फजीलत रखता है इसलिए कि सहाबा और ताबेईन यह अकीदा रखते थे कि तमाम उम्मत में अफज़ल हज़रत अबु बकर है और फिर हज़रत उमर हालांकि बहुत से मसाइल इख़्तिलाफिया में उन दोनों हज़रात के मुखालिफ़ दुसरे हज़रात की तकलीद किया करते थे और किसी ने उनपर इंकार नहीं किया, लिहाज़ा यह मसअला इजमाई हुआ। (अकदुल मजीद पेज 72)

दूसरी बात यह है कि सहाबा-ए-कराम की तकलीद इसलिए हरगिज़ नहीं छोड़ी गई कि वह अफज़ल उम्मत न थे बल्कि उनकी तकलीद



इसलिए छोड़ी गई है कि उनके जुम्ला मसाइल मुजतहिद फीहा मुदौव्विन नहीं थे, बखिलाफ अइम्मा अरबा के, उनके तमाम मसाइल मुदौव्विन हैं और आसानी से मिल सकते हैं और उनपर अमल करना आसान है। हदीस की मशहूर व मारुफ किताबें सहाबा-ए-कराम ने नहीं लिखी हैं बल्कि अइम्मा अरबा के बाद मुहद्दीसीन ने लिखी हैं जिनको पूरी उम्मत मुस्लिमा ने कबूल किया है, इसी तरह अइम्मा अरबा की कुरान व हदीस फहमी को उम्मत मुस्लिमा ने तसलीम किया है।

**छठा एतेराज़-** अइम्मा मुजतहेदीन खुद अपनी तकलीद से मना किया थे फिर उनकी तकलीद किस तरह जायज़ होगी और इसी तरह फुकहा लोगों को इससे रोकते थे। इस शुबहा के दो जवाब दिए जा सकते हैं।

पहला जवाब- यह कहना कि अइम्मा मुजतहेदीन खुद अपनी तकलीद से मना किया करते थे सही नहीं है क्योंकि अइम्मा कराम लोगों को जो फतवा दिया करते थे उनके फतवों में दलायल तफसील से मज़कूर नहीं होते थे, इससे साफ ज़ाहिर है कि अमली तौर पर तकलीद को जायज़ रखते थे, इसी तरह फुकहा-ए-कराम से भी अमली तौर पर तकलीद साबित है। अगर इमाम मुजतहिद किसी शख्स के सवाल का जवाब देता है तो इमाम मुजतहिद का मकसद वाजेह है कि उसने कुरान व हदीस की रौशनी में यह जवाब दिया है, लिहाज़ा उसपर अमल करो।

दुसरा जवाब- बाज़ अइम्मा मुजतहेदीन ने जहां पर तकलीद से मना किया है वह उन लोगों को मना किया है जो खुद दरजा इजतिहाद तक पहुंचे हुए थे, इमाम शुरानी फरमाते हैं, “तकलीद की ममानिअत

उस शख्स के लिए है जो पूरे तौर पर मुजतहिद हो वरना उलमा तसरीह करते हैं कि गैर मुजतहिद पर तकलीद वाजिब है, ताकि वह अपने दीन में गुमराह न हो और फुकहा ने भी तकलीद मजमूम और गैर मशरू से मना किया है न कि तकलीद महमूद व मशरू से। (मीज़ान अल कुबरा, मतबूआ मिश्र पेज 80, जिल्द 1) साहबुल यवाकीत वल ज़वाहिर फरमाते हैं कि तकलीद की ममानिअत मुजतहिद के लिए है वरना गैर मुजतहिद पर एक इमाम की तकलीद वाजिब है, वरना वह बरबाद व गुमराह हो जाएगा। (अल यवाकीत पेज 69, जिल्द 2)

**सातवां एतेराज़-** गैर मुकल्लिदीन हज़रात तकलीद की ज़रूरत का इंकार करते हुए फरमाते हैं कि कुल्लान व हदीस आसान है इसलिए उनसे अहकाम के समझने में किसी के वास्ता की मुसलक ज़रूरत नहीं, चूनांचे कुरान (सूरह कमर 23) में है “और बिला शुबहा हमने कुरान को नसीहत के लिए आसान बना दिया है, क्योंकि कोई नसीहत पकड़ने वाला है।

जवाब- इस आयत के अल्फाज़ पर गौर फरमाए तो साफ मालूम हो जाएगा कि कुरान की वह आयात आसान हैं जो वाज़ व तज़कीर और नसीहत व इबरत के मज़ामीन पर मुशतमिल हैं यही वजह है कि अल्लाह तआला ने “लिज़ जिक्र” का लफ्ज इस्तेमाल किया है यानी कुरान नसीहत के लिए आसान किया गया है। रहीं वह आयात जो अहकाम पर मुशतमिल हैं सो उनका दकीक होना बिल्कुल ज़ाहिर है, चूनांचे हदीस में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है “कुरान सात हरूफ पर नाजिल किया गया है, उन में से हर एक आयत के एक ज़ाहिरी मानी हैं और एक बातनी और हर हद के ख़ि

इत्तिला का तरीका अलग अलग है (यानी ज़ाहिरी के लिए अरबी ज़बान और बातनी के लिए कुव्वते फहम)। (सही इबने हब्बान, तिबरानी) सिर्फ़ ज़क़ान करीम का उदू तर्जुमा पढ़ कर इंसान उल्ल कुरान व सुन्नत का माहिर नहीं बन जाता कि कुरान व हदीस की रौशनी में फ़हमा व उलमा व मुहद्दीसीन व मुफ़स्सेरीन के बयान करदा अहकाम व मसाइल को गलत करार देने लगे जैसा कि इन दिनों बाज हज़रात कर रहे हैं।

**आठवां एतेराज़-** गैर मुकल्लिदीन हज़रात एतेराज़ करते हैं कि मुकल्लेदीन जहां कहीं अपने इमाम के कौल को हदीस के खिलाफ भी पाते हैं वहां भी वह हदीस के मुकाबला में इस कौल को नहीं छोड़ते हालां कि खुद उनके इमाम अबू हनीफा का कौल है “यानी जहां कहीं मेरे कौल को ख़बर रसूल के खिलाफ पाओ उसको छोड़ दो।

जवाब-किसी भी मसअला में इमाम का कौल मौज़ू हो या न हो हुक्म नबवी के खिलाफ करना एक मुस्लान से कतअन बर्इद है। जो शख्स रसूल को बरहक जानता हो क्या वह ऐसा कर सकता है और इस किसम की ज़ुरअत उससे मुमकिन है कि जैद व उमर के ऐसे कौल पर जिसको फरमान नबवी के खिलाफ जानता हो अमल करे और उसके मुकाबला में कौले मासूम को छोड़ दे, मुसलमानों पर तो लाजिम व ज़रूरी है की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही का हुकुम मानें और इसी पर आमिल हों और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के मुकाबला में किसी की भी बात न माने। रही यह बात कि मुकल्लिदीन ऐसा वैसा करते हैं, सो यह गैर मुकल्लिदीन का बुहतान अजीम है। हज़रत इमाम अबू हनीफा का यह फरमान इंतेहाई वुसअत नज़री और अल्लाह के खौफ की अलामत है

और उनके कहने का मकसद सिर्फ यह है कि मैं हमेशा सुन्न व हदीस की रौशनी में ही अहकाम व मसाइल बयान करता हूँ, लेकिन खुदा नखास्ता अगर कोई मेरा फैसला कुरान व हदीस के खिलाफ नज़र आए तो उसे छोड़ कर कुरान व हदीस पर अमल करना। लेकिन इसका मतलब हरगिज़ यह नहीं है कि जो कुछ इस दौर के आलिमे दीन ने समझा है तो वह सबका सब सही है और इमाम अबू हनीफा ने जो भी समझा है वह सबका सब गलत है। उलमा अहनाफ और गैर मुकल्लेदीन हज़रात के दरमियान तमाम मुख्तलिफ फिह मसाइल में से किसी एक मसअला में भी गैर मुकल्लेदीन हज़रात ने अपनी राय को गलत और इमाम अबू हनीफा की राय को सही नहीं करार दिया है। गर्जकि उन हज़रात का इमाम अबू हनीफा का यह कौल जिक्क करने का मकसद सिर्फ यह बताना है कि इमाम अबू हनीफा गलत और हम सही हैं जो किसी भी हाल में काबिले कबूल नहीं है। यानी असरे हाजिर के गैर मुकल्लिद आलिम को अपनी कुरान व हदीस फहमी पर इतना यकीन है कि वह इस तरह की इबारत अपने लिए इस्तेमाल नहीं करता बल्कि 80 हिजरी में पैदा हुए मशहूर फकीह व मुहद्दिस के राय को बातिल करार देने और लोगों में इमाम अबू हनीफा से नफरत पैदा करने के लिए उनकी इस इबारत को जिक्क करता है। इकीसवी सदी के आलिम की राय को हक और 80 हिजरी में पैदा हुए इमाम अबू हनीफा और उलमा अहनाफ की कुरान व हदीस पर मबनी राय को बातिल करार देना उम्मते मुस्लिमा में फितना बर्पा करने के मुतरादिफ है और कुरान के इलान के मुताबिक फितना परवरी किसी को नाहक कतल करने से भी बड़ा गुनाह है।

**एक शुबहा का इजाला-** बाज़ गैर मुकल्लिदीन हज़रात फिकहा से नफरत करते हैं और कहते हैं कि फिकहा लोगों ने अपनी तरफ से बना लिया है जो कुरान व हदीस के खिलाफ है और अइम्मा मुजतहेदीन को बुरा भला कहते हैं, उनकी शान में गुस्ताखी करते हैं। यह बात उनकी गलत और जिहालत पर मबनी है। अइम्मा मुजतहेदीन कुरान व हदीस पर ही अमल करते हैं और कुक़ान व हदीस से ही मसाइल का इस्तिंबात करते हैं। मसलन रमज़ान के रोज़े की हालत में जानबुझ कर सोहबत करने से कफ़ारा वाजिब होता है जिसकी वज़ाहत अहादीस नबविया में मज़ूक़ है लेकिन अगर कोई शख्स भूल कर या बेग़ैर किसी उज़्र के रमज़ान के रोज़े की हालत में कुछ खा पी कर रोज़ा तोड़ दे तो उसका हुकुम कुरान व हदीस में मौजूद नहीं है लेकिन उलमा ने सोहबत पर कयास करके कुछ खा पी कर रोज़ा तोड़ने वाले पर भी कफ़ारा वाजिब होने का फैसला फरमाया है। इसी का नाम फिकहा है। गर्जकि कुक़ान व हदीस का समझना फिकहा कहलाता है। फिकहा को समझने से पहले इमाम अबू हनीफा के एक अहम असूल व ज़वाबित को जेहन में रख कि मैं पहले किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल को इख्तियार करता हूँ, जब कोई मसइला किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल में नहीं मिलता तो सहाबा-ए-कराम के अकवाल व अमल को इख्तियार करता हूँ। उसके बाद दुसरोँ के फतावा के साथ अपने इजतिहाद व कयास पर तवज्जा देता हूँ। जब मसअला कयास व इजतिहाद पर आ जाता है तो फिर मैं अपने इजतिहाद को तरजीह देता हूँ यह हज़रत इमाम अबू हनीफा का अपना खुद बनाया हुआ असूल नहीं है बल्कि इस मशहूर हदीस की इत्तिबा है जिसमें रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने हज़रत मुआज़ बिन जबल को वसीयत फरमाई थी। इसी तरह हज़रत इमाम अबू हनीफा का यह असूल है कि अगर मुझे किसी मसअला में कोई हदीस मिल जाए खाह उसकी सनद में कोई कमजोरी भी हो तो मैं अपने इजतिहाद व कयास को छोड़ कर उसको कबूल करता हूँ। कुरान व हदीस में बहुत सी जगहों पर फिकहा का जिक्र भी वज़ाहत के साथ मौजूद है। मशहूर हदीस की किताब (बुखारी, मुस्लिम, तिरमीजी, अबु दाउद, नसई, इब्ने माजा, तिबरानी, बैहकी, मसनद इब्ने हब्बान, मसनद अहमद वगैरह) की तालिफ से पहले ही इमाम अबू हनीफा के शागिदों ने फिकहा हनफी को किताबों में मुत्तब कर दिया था। अगर वाकई फिकहा काबिले रद्द है तो मज़कूर हदीस के किताबों के मुसन्नेफों ने अपनी किताबों में फिकहा की तरदीद में कोई बाब क्यों नहीं बनाया? या कोई दूसरी मुस्तकिल किताब फिकहा की तरदीद में क्यों नहीं की? गर्जकि यह उन हज़रात की हठधरमी है वरना कुरान व हदीस को समझ को मसाइल का इस्तिबात करना ही फिकहा कहलाता है, जिसे जम्हुर मुहद्दीसीन व मुफस्सेरीन व उलमा उम्मत ने तसील किया है। फिकहा हनफी का यह खोसूसी इम्तियाज़ है कि साबका हुकुमतों (खास कर अब्बासिया व उसमानिया हुकुमत) का 80 फीसद कानून अदालत व फौजदारी फिकहा हनफी रहा है। यह कवानीन कुरान व हदीस की रौशनी में बनाए गए हैं।

**खुलासा कलाम** यह है कि उम्मत मुस्लिमा एक हज़ार साल से ज्यादा अरसों से चारों अइम्मा की तकलीद के मसअला पर मुत्तफक चली आ रही है। और चारों अइम्मा की तकलीद कुलान व हदीस की इत्तिबा ही है। फरूई मसाइल में उम्मत मुस्लिमा के इखिलाफात

को हक व बातिल की जंग की तरह लोगों के सामने पेश न किया जाए बल्कि चारों अइम्मा की कुरान व हदीस पर मबनी राय का पूरा इहतिराम किया जाए। इमाम हरम शैख अब्दुर रहमान अस सुदैस ने बर्र सगीर की अहम इल्मी दरसगाह दारूल उलूम देवबन्द के सफर के दौरान फरमाया था कि उन फरूई मसाइल में इखितलाफ का हल न आज तक हुआ है और न बज़ाहिर होगा। सउदी अरब के साबिक बादशाह शाह अब्दुल्लाह ने न सिर्फ उम्मत मुस्लिमा के तमाम मकातिबे फिक्र को जोड़ने के लिए खोसूसी हिदायत जारी फरमाये बल्कि इसलाम और दुसरे मज़ाहिब के दरमियान भी इखितलाफात कम करने पर जोड़ दिया और इस सिलसिला में उन्होंने लाखों रियाल खर्च करके बुह्रा सी जगहों पर काँफ्रे सों का प्रोग्राम शुरू किया। लिहाज़ा हम अपनी सलाहियतें फरूई मसाइल में उम्मत मुस्लिमा को तकसीम करने में नहीं बल्कि उम्मत के दरमियान इत्तिहाद व इत्तिफाक पैदा करने में लगायें जो वक्त की अहम ज़रूरत है वरना इसलाम मुखालिफ ताकतें अपने मकसद में कामयाब होंगी। उम्मत मुस्लिमा के तकरीबन 95 फीसद को चारों अइम्मा की राय पर अमल करने दें जैसा कि अरसा दराज़ से चला आ रहा है क्योंकि चारों अइम्मा की तकलीद करना कुरान व हदीस की इत्तिबा ही है जैसा कि दलायल के साथ जिक्र किया गया।

## इमाम अबू हनीफा

### (80 हिजरी से 150 हिजरी) हयात और कारनामे

#### हज़रत इमाम हनीफा के मुख्तसर हालाते ज़िन्दगी

आपका इस्मे गिरामी नोमान और कुन्नियत अबू हनीफा है। आपकी विलादत 80 हिजरी में इराक़ के कूफ़ा शहर में हुई। आप फारसी नस्ल थे। आपके वालिद का नाम साबित था और आपके दादा नोमान बिन मरज़बान काबुल के अयान व अशराफ में बड़ी फहम व फिरासत के मालिक थे। आपके परदादा मरज़बान फारस के एक इलाके के हाकिम थे। आपके वालिद हज़रत साबित बचपन में ही हज़रत अली की खिदमत में लाए गए तो हज़रत अली ने आप और आपकी औलाद के लिए बरकत की दुआ फरमाई जो ऐसी क़बूल हुई कि इमाम अबू हनीफा जैसा अज़ीम मुहद्दिस व फकीह और खुदा तरस इंसान पैदा हुआ।

आपने ज़िन्दगी के इब्तिदाई दिनों में ज़रूरी इल्म की तहसील के बाद तिजारत शुरू की, लेकिन आपकी ज़ेहानत को देखते हुए इल्मे हदीस की मारूफ शख्सियत आमिर शाबी कूफी (17 हिजरी से 104 हिजरी) जिन्हें पांच सौ से ज़्यादा असहाबे रूस्स की ज़ियारत का शरफ हासिल है ने आपको तिजारत छोड़ कर मज़ीद इल्मी कमाल हासिल करने का मशवरा दिया, चुनांचे आपने इमाम शाबी कूफी के मशवरे पर इल्मे कलाम, इल्मे हदीस और इल्मे फिक़ह की तरफ तवज्जोह फरमाई और ऐसा कमाल पैदा किया कि इल्मी व अमली दुनिया में इमाम आज़म कहलाए। आपने कूफा, बसरा और बग़दाद के बेशुमार



शैखों से इल्मी इस्तिफादा करने के साथ हुसूले इल्म के लिए मक्का, मदीना और मुल्के शाम के बहुत से असफार किए। एक वक़्त ऐसा आया कि अब्बासी खलीफा अबू जाफर मंसूर ने हज़रत इमाम अबू हनीफा को मुल्क के काज़ी होने का मशवरा दिया, लेकिन आपने माज़रत चाही तो वह अपने मशवरे पर इसरार करने लगा, चुनांचे आपने सराहतन इंकार कर दिया और क़सम खाली कि वह यह ओहदा क़बूल नहीं कर सकते जिसकी वजह से 146 हिजरी में आपको कैद कर दिया गया। इमाम साहब की इल्मी शोहरत की वजह से कैदखाना में भी तालीमी सिलसिला जारी रहा और इम्माम मोहम्मद जैसे फ़कीह ने जेल में ही इमाम अबू हनीफा से तालीम हासिल की। इमाम अबू हनीफा की मक़बूलियत से खौफ़ज़दा खलीफ़ा वक़्त ने इमाम साहब को ज़हर दिलवा दिया। जब इमाम साहब को ज़हर का असर महसूस हुआ तो सज्दा किया और इसी हालत में वफात पा गए। तक्ररीबन पचास हज़ार अफराद ने नमाज़े जनाजा पढ़ी, बग़दाद के खैज़रान क़ब्रिस्तान में दफन किए गए। 375 हिज़ी में इस क़ब्रिस्तान के करीब एक बड़ी मस्जिद “जामे अल इमाम आज़म” तामीर की गई जो आज भी मौजूद है। गरज़ 150 हिजरी में सहाबा व बड़े बड़े ताबेईन से रिवायत करने वाला एक अज़ीम मुहद्दिस व फ़कीह दुनिया से रुखसत हो गया और इस तरह सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला के खौफ से काज़ी के ओहदे को क़बूल न करने वाले ने अपनी जान का नज़राना पेश कर दिया, ताकि खलीफ़ा वक़्त अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कोई फैसला न करा सके जिसकी वजह से मौलाए हकीकी नाराज़ हो।

## हज़रत इमाम अबू हनीफा के बारे में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बशारत

मुफस्सिर कुरान शैख जलालुद्दीन सुयूती शाफई मिस्री (849 हिजरी से 911 हिजरी) ने अपनी किताब “तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा” में बुखारी व मुस्लिम और दूसरी हदीस की किताबों में वारिद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल “(अगर ईमान सुरय्या सितारे के करीब भी होगा तो अहले फारस में से बाज़ लोग उसको हासिल कर लेंगे। (बुखारी) अगर ईमान सुरय्या सितारे के पास भी होगा तो अहले फारस में से एक शख्स उसमें से अपना हिस्सा हासिल कर लेगा। (मुस्लिम) अगर इल्म सुरय्या सितारे पर भी होगा तो अहले फारस में से एक शख्स उसको हासिल कर लेगा। (तबरानी) अगर दीन सुरय्या सितारे पर भी मुअल्लक होगा तो अहले फारस में से कुछ लोग उसको हासिल कर लेंगे। (तबरानी)” ज़िक्र करने के बाद तहरीर फरमाया है कि मैं कहता हूँ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इमाम अबू हनीफा (शैख नोमान बिन साबित) के बारे में उन अहादीस में बशारत दी है और यह अहादीस इमाम साहब की बशारत व फज़ीलत के बारे में ऐसे सरीह हैं कि उनपर कुक़मल एतेमाद किया जाता है। शैख इब्ने हजर अलहैसमी शाफई (909 हिजरी से 973 हिजरी) ने अपनी मशहूर व मारूफ किताब “अलखैरातुल हिसान फी मनाकिबि इमाम अबी हनीफा” में तहरीर किया है कि शैख जलालुद्दीन सूयूती के बाज़ तलामिज़ा ने फरमाया और जिस पर हमारे मशायख ने भी एतेमाद किया है कि उन अहादीस की मुराद बिला शुबहा इमाम अबू हनीफा

हैं, इस लिए कि अहले फारस में उनके आसरीन में से कोई भी इल्मे के उस दरजे को नहीं पहुंचा जिस पर इमाम साहब फायज़ थे।

**(वज़ाहत)** इन अहादीस की मुराद में इख्तिलाफे राय हो सकता है, मगर असरे कदीम से असरे हाज़िर तक हर ज़माने के मुहद्दिसीन व फुक्कहा व उलमा की एक जमाअत ने लिखा है कि इन अहादीस से मुराद हज़रत इमाम अबू हनीफा हैं। उलमाए शवाफे ने खास तौर पर इस कौल को मुदल्लल किया है जैसा कि शाफई मक्तबए फिक्र के दो मशहूर जय्यिद उलमा व मुफस्सिरे कुरान के अक्वाल ज़िक्र किए गए।

### **हज़रत इमाम अबू हनीफा के ताबइयत**

हाफिज़ इब्ने हजर असकलानी (फन्ने हदीस के इमाम शुमार किए जाते हैं) से जब इमाम अबू हनीफा के मुतअल्लिक सवाल किया गया तो उन्होंने फरमाया कि इमाम अबू हनीफा ने सहाबए किराम की एक जमाअत को पाया, इसलिए कि वह 80 हिजरी में कूफा में पैदा हुए और वहां सहाबए किराम में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफी मौजूद थे, उनका इंतिकाल इसके बाद हुआ है। बसरा में हज़रत अनस बिन मालिक थे और उनका इंतिकाल 90 या 93 हिजरी में हुआ है। इब्ने साद ने अपनी सनद से बयान किया है कि इसमें कोई हर्ज नहीं कि कहा जाए कि इमाम अबू हनीफा ने हज़रत अनस बिन मालिक को देखा है और वह तबक़ए ताबेईन में से हैं, नीज़ हज़रत अनस बिन मालिक के अलावा भी इस शहर में दूसरे सहाबए किराम उस वक़्त हयात थे।

शैख मोहम्मद बिन यूसुफ दिमश्की शाफई ने “उकूदुल जमान फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा” के नवें बाब में जिक्र किया है कि इसमें कोई इख्तिलाफ नहीं है कि इमाम अबू हनीफा उस ज़माने में पैदा हुए जिसमें सहाबए किराम की कसरत थी।

अक्सर मुहद्दिसीन (जिनमें इमाम खतीब बगदादी, अल्लामा नववी, अल्लामा इब्ने हजर, अल्लामा ज़हबी, अल्लामा ज़ैनुल आबेदीन सखावी, हाफिज़ अबू नईम असबहानी, इमाम दारे कुतनी, हाफिज़ इब्ने अब्दुल बर और अल्लामा जौज़ी के नाम काबिले जिक्र हैं) का यही फैसला है कि इमाम अबू हनीफा ने हज़रत अनस बिन मालिक को देखा है। मुहद्दिसीन व मुहक्केकीन की तशरीह के मुताबिक सहाबी के लिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करना ज़रूरी नहीं है बल्कि देखना भी काफी है। इसी तरह ताबई का मामला है कि ताबई कहलाने के लिए सहाबिए रसूल से रिवायत करना ज़रूरी नहीं है बल्कि सहाबी का देखना भी काफी है। इमाम अबू हनीफा तो सहाबए किराम की एक जमाअत को देखने के अलावा बाज़ सहाबा खास कर हज़रत अनस बिन मालिक से आहादीस रिवायत भी की हैं।

गरज़ ये कि हज़रत इमाम अबू हनीफा ताबई हैं और आपका ज़माना सहाबा, ताबईन और तबे ताबईन का ज़माना है और यह वह ज़माना है जिस दौर की अमानत व दियानत और तक्वा का जिक्र अल्लाह तआला ने कुरान करीम (सूरह तौबा आयत 100) में फरमाया है। नीज़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के मुताबिक यह बेहतरीन ज़मानों में से एक है। इसके अलावा उल्लू अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयात में ही हज़रत

इमाम अबू हनीफा के मुतअल्लिक बशारत दी थी जैसा कि बयान किया जा चुका जिससे हज़रत इमाम आजम अबू हनीफा की ताबईयत और फज़ीलत रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो जाती है।

### **सहाबए किराम से हज़रत इमाम अबू हनीफा की रिवायात**

इमाम अबू माशर अब्दुल करीम बिन अब्दुस समद मुक़री शाफई ने एक रिसाला तहरीर फरमाया है जिसमें उन्होंने इमाम अबू हनीफा की मुख्तलिफ सहाबए किराम से रिवायात नक़ल की है:

- (1) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जज़ाउज़ जुबैदी रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (3) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (4) हज़रत मअक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (5) हज़रत वासिला बिन असक्रा रज़ियल्लाहु अन्हु।
- (6) हज़रत आइशा बिनत उज़्र रज़ियल्लाहु अन्हा।

**(वज़ाहत)** मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने 8 सहाबा से इमाम अबू हनीफा का रिवायत करना साबित किया है, अलबत्ता बाज़ मुहद्दिसीन ने इससे इख़्तिलाफ किया है, मगर इमाम अबू हनीफा के ताबई होने पर जमहूर मुहद्दिसीन का इत्तिफाक है।

### **फुक्रहा व मुहद्दिसीन की बस्ती शहर कूफा**

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे खिलाफत में मुस्के इराक फतह होने के बाद हज़रत साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु की इजाज़त से 17 हिजरी में कूफा शहर बसाया, क़बाइले अरब में से फुसहा को आबाद

किया गया। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जलीलुल क़दर सहाबी को वहां भेजा ताकि वह कुरान व सुन्नत की रौशनी में लोगों की रहनुमाई फरमाएं। सहाबए किराम के दरमियान हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की इल्मी हैसियत मुसल्लम थी, खुद सहाबए किराम भी मसाइले शरइया में उनसे रुजू फरमाते थे। उनके मुतअल्लिक हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात हदीस की किताबों में मौजूद हैं।

इब्ने उम्मे अब्द (यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु) के तरीक़ को लाज़िम पकड़ो। जो कुरान पाक को उस अंदाज में पढ़ना चाहे जैसा नाज़िल हुआ था तो उसको चाहिए कि इब्ने उम्मे अब्द (यानी अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु) की किरात के मुताबिक़ पढ़े। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फरमाया कि वह इल्म से भरा हुआ एक ज़र्फ़ है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर फारूक और हज़रत उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अहदे खिलाफत में अहले कूफा को कुरान व सुन्नत की तालीम दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अहदे खिलाफत में जब दारुल खिलाफत कूफा मुंतक़िल कर दिया गया तो कूफा इल्म का गहवारा बन गया। सहाबए किराम और ताबईन की एक जमाअत खास कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके शागिर्दों ने इस बस्ती को इल्म व अमल से भर दिया। सहाबए किराम के दरमियान फकीह की हैसियत रखने वाले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु का इल्मी वरसा

हज़रत इमाम अबू हनीफा के मशहूर उस्ताज़ शैख हम्माद और मशहूर ताबेईन शैख इब्राहीम नखई व शैख अल्क़मा के ज़रिये इमाम अबू हनीफा तक पहुंचा। शैख हम्माद सहाबिए रसूल हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के भी सबसे करीब और मोतमद शागिर्द हैं। शैख हम्माद की सोहबत में इमाम अबू हनीफा 18 साल रहे और शैख हम्माद के इंतिकाल के बाद कूफा में उनकी मसनद पर इमाम अबू हनीफा को ही बैठाया गया। गरज़ ये कि इमाम अबू हनीफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के इल्मी वरसा के वारिस बने, इसी लिए हज़रत इमाम अबू हनीफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायात और उनके फैसले को तरजीह देते हैं, मसलन अहादीस की किताबों में वारिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायात की बिना पर हज़रत इमाम अबू हनीफा ने नमाज़ में रूकसे पहले और बाद में रफे यदैन् न करने को राजेह करार दिया है। हज़रत इमाम अबू हनीफा का इसमें गिरामी नोमान बिन साबित कुन्नियत अबू हनीफा है।

## हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के अहदे खिलाफत में तदवीन हदीस और इमाम अबू हनीफा

खलीफा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के खास इहतिमाम से वक़्त के दो जय्यिद मुहद्दिस शैख अबू बकर बिन अलहज़म और मोहम्मद बिन शहाब ज़ोहरी की ज़ेरे निगरानी अहादीसे रसूल को किताबी शकल में जमा किया गया। अब तक यह अहादीस मुंतशिर हालतों में ज़बानों और सीनों में महफूज़ चली आ रही थीं। इस्लामी तारीख में इन्ही दोनों मुहद्दिस को हदीस का मुदव्विने अव्वल कहा जाता है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी हयाते तय्यिबा में उम्मी तौर पर अहादीस लिखने से मना फरमा दिया था ताकि कुरान व हदीस एक दूसरे से मिल न जाएं, अलबत्ता बाज़ फुक़हा सहाबा (जिन्हें कुरान व हदीस की इबारतों के दरमियान फर्क़ मात्मा था) को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हयाते तय्यिबा में भी अहादीस लिखने की महदूद इजाज़त थी। खुलफ़ाए राशिदीन के अहद में जब कुरान करीम तदवीन के मुख्तलिफ़ मराहिल से गुज़र कर एक किताबी शकल में उम्मत मुस्लिमा के हर फर्द के पास पहुंच गया तो ज़रूरत थी कि कुरान करीम के सबसे पहले पहले मुफस्सिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस को भी मुदव्वन किया जाए, चुनांचे अहादीसे रसूल का मुकम्मल ज़खीरा जो मुंतशिर औराक और जबानों पर जारी था इतिहाई एहतियात के साथ हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की अहदे खिलाफत में मुरत्तब किया गया। अहादीसे नबविया के उस ज़खीरे की सनद में उम्मन दो रावी थे एक सहाबी और ताबेई। इन अहादीस के ज़खीरे में ज़ईफ़ या मौजू होने का एहतेमाल भी नहीं था। नीज़ यह वह मुबारक दौर था जिसमें असमाउर रिजाल के इल्म का वजूद भी नहीं आया था और न उसकी ज़रूरत थी, क्योंकि हदीसे रसूल बयान करने वाले सहाबए किराम और ताबेईन इज़ाम या फिर तबे ताबेईन हज़रात थे और उनकी अमानत व दियानत और तक़वा का ज़िक्र अल्लाह तआला ने कुरान करीम (सूरह तौबा 100) में फरमाया है।

हज़रत इमाम अबू हनीफा को इन्हीं अहादीस का ज़खीरा मिला थे, चुनांचे उन्होंने कुरान करीम और अहादीस के इस ज़खीरे से इस्तिफादा फरमा के उम्मत मुस्लिमा को इस तरह मसाइले शरइया



से वाक़िफ़ कराया कि 1300 साल गुज़र जाने के बाद भी तक्ररीबन 75 फीसद उम्मत मुस्लिमा उसपर अमल पैरा है और एक हज़ार साल से उम्मत मुस्लिमा की अक्सरियत इमाम अबू हनीफ़ा की तफ़सीर व तशरीह और वज़ाहत व बयान पर ही अमल करती चली आ रही है। इमाम अबू हनीफ़ा को अहादीसे रसूल सिर्फ़ दो वास्तों (सहाबी और ताबई) से मिली हैं, बल्कि बाज़ अहादीस इमाम अबू हनीफ़ा ने सहाबए किराम से बराहे रास्त भी रिवायत की हैं। दो वास्तों से मिली अहादीस को अहादीस सुनाई कहा जाता है जो सनद के एतेबार से हदीस की आला किस्म शुमार होती है। बुखारी और दूसरी हदीस की किताबों में दो वास्तों की कोई भी हदीस मौजूद नहीं है। तीन वास्तों वाली यानी अहादीसे सुलासियात बुखारी में सिर्फ़ 22 हैं, उनमें से 20 अहादीस इमाम बुखारी ने इमाम अबू हनीफ़ा के शागिर्दों से रिवायत की हैं।

## 80 हिजरी से 150 हिजरी तक इस्लामी हुकूमत और हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा

इमाम अबू हनीफ़ा की विलादत 80 हिजरी में उमवी खलीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान के दौरै हुकूमत में हुई, जिसका इंतिकाल 86 हिजरी में हुआ, उसके बाद उसका बेटा वलीद बिन अब्दुल मलिक तख्त नशीन हुआ। 10 साल हुकुमरानी के बाद 96 हिजरी में उसका भी इंतिकाल हो गया फिर उसका भाई सुलैमान बिन अब्दुल मलिक जानशीन बना। 3 साल की हुकुमरानी के बाद 99 हिजरी में यह भी रुखसत हुआ, लेकिन सुलैमान बिन अब्दुल मलिक ने अपनी वफ़ात से पहले हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को अपना जानशीन मुक़रर

करके ऐसा कारनामा अंजाम दिया जिसको तारीख कभी नहीं भुला सकती। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का दौर ख़िलाफ़त (99 हिजरी से 101 हिजरी) अगरचे निहायत मुख़्तसर रहा मगर ख़िलाफ़ते राशिदा का ज़माना लोगों को याद आ गया, हत्ताकि रिआया में उनका लक़ब खलीफ़े ख़ामिस (पांचवां खलीफ़ा) करार पाया। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के दौर ख़िलाफ़त में इमाम अबू हनीफ़ा की उम्र (19-21) साल थी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के कारनामों में एक अहम कारनामा तदवीने हदीस है जिसकी तदवी का मुख़्तसर बयान गुज़र चुका, गरज़ ये कि तदवीने हदीस का अहम दौर इमाम अबू हनीफ़ा ने अपनी आंखों से देखा है। इमाम अबू हनीफ़ा ने इस्लामी दौर की दो बड़ी हुकूमतों (बनू उमय्या और बनू अब्बास) को पाया। ख़िलाफ़ते बनू उमय्या के आखिरी दौर में हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा का हुकुमरानों से इख़्तिलाफ़ हो गया था जिसकी वजह से आप मक्का चले गए और वहीं सात साल रहे। ख़िलाफ़ते बनू अब्बास के क़याम के बाद आप फिर कूफ़ा तशरीफ़ ले आए, अब्बासी खलीफ़ा अबू जाफ़र मंसूर हुकूमत की मज़बूती के लिये इमाम अबू हनीफ़ा की ताईद चाहता था जिस के लिये उसने मुल्क का ख़ास ओहदा पेश किया मगर आपने हुकूमती मामलात में दखल अंदाज़ी से माज़रत चाही, क्योंकि हुकुमरानों के अगराज़ व मक़ासिद से इमाम अबू हनीफ़ा अच्छी तरह वाक़िफ़ थे, इसी वजह से 146 हिजरी में आपको जेल में कैद कर दिया गया, लेकिन जेल में भी आपकी मक़बूलियत में कमी नहीं आई और वहां भी आपने क़ुरान व हदीस और फ़िक़ह की तालीम जारी रखी, चुनांचे इमाम मोहम्मद ने जेल में ही आपसे तालीम हासिल की। हुकुमरानों ने इसपर ही बस

नहीं किया बल्कि रोज़ाना 20 कोड़ों की सजा भी मुकर्रर की (खतीब अलबगदादी जिल्द 13 पेज 328)। 150 हिजरी में इमाम साहब दो पानी से दारे बक्का की तरफ कूच कर गए। इमाम अहमद बिन हमबल इमाम अबू हनीफा के आजमाइशी दौर को याद करके रोया करते थे और उनके लिए दुआये मगफिरत किया करते थे। (अलखैरातुल हिसान जिल्द 1 पेज 59)

### हज़रत इमाम अबू हनीफा और इल्मे हदीस

इमाम अबू हनीफा से अहादीस की रिवायत हदीस की किताबों में कसरत से न होने की वजह से बाज़ लोगों ने यह तअस्सुर पेश किया है कि इमाम अबू हनीफा की इल्मे हदीस में महारत कम थी, हालांकि गौर करें कि जिस शख्स ने सिर्फ बीस साल की उम्र इल्मे हदीस पर तवज्जोह दी हो, जिसने सहाबा, ताबईन और तबे ताबईन का बेहतरीन ज़माना पाया हो, जिसने सिर्फ एक या दो वास्तों से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस सुनी हो, जिसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद जैसे जलीलुल क़दर फ़कीह सहाबी के शागिर्दों से 18 साल तरबियत हासिल की हो, जिसने उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का अहदे खिलाफ़त पाया हो जो तदवीने हदीस का सुनहरा दौर रहा है, जिसने कूफा, बसरा, बगदाद, मक्का मदीना और मुल्के शाम के ऐसे असातज़ा से अहादीस पढ़ी हो जो अपने ज़माने के बड़े बड़े मुहद्दिस रहे हों, जिसने क़ुरान व हदीस की रौशनी में हज़ारों मसाइल का इस्तिम्बात किया हो, क़ुरान व हदीस की रौशनी में किए गए जिसके फैसले को हज़ार साल के अरसे सेज़्यादा उम्मतें मुस्लिमा नीज़ बड़े बड़े उलमा व मुहद्दिसीन व मुफ़स्सेरीन

तसलीम करते चले आए हों, जिसने फ़िक्रह की तदवीन में अहम स्ने अदा किया हो, जो सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन समूद का इल्मी वारिस बना हो, जिसने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद जैसे फ़क़हा सहाबा के शागिर्दों से इल्मी इस्तिफ़ादा किया हो, जिसके तलामजा बड़े बड़े मुहद्दिस, फ़कीह और इमामे वक़्त बने हों तो उसके मुतअल्लिक़ ऐसा तअस्सुर पेश करना सिर्फ़ और सिर्फ़ गुब्ब व इनाद और इल्म की कमी का नतीजा है। यह ऐसा ही है कि कोई शख्स हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु के मुतअल्लिक़ कहे कि उनको इल्मे हदीस से मारेफ़त कम थी, क्योंकि उनसे गिन्ती के चंद अहादीस हदीस की किताबों में मरवी हैं, हालांकि उन हज़रात का कसरते रिवायत से इजतिनाब दूसरे असबाब की वजह से था जिसकी तफ़सीलात किताबों में मौजूद हैं। गरज़ ये कि इमाम अबू हनीफ़ा फ़कीह होने के साथ साथ अज़ीम मुहद्दिस भी थे।

## हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और हदीस की मशहूर किताबे

अहादीस की मशहूर किताबें (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, तबरानी, बैहकी, मुसनद अहमद, मुसनद इब्ने हिब्बान, मुसनद अहमद बिन हमबल वगैरह) इमाम अबू हनीफ़ा की वफ़ात के तक्ररीबन 150 साल बाद लिखी गई हैं। इन मजूक़ा किताबों के मुसन्निफ़ीन इमाम अबू हनीफ़ा की हयात में मौजूद ही नहीं थे, उनमें से अक्सर इमाम अबू हनीफ़ा के शगिर्दों के शगिर्द हैं। मशहूर हदीस की किताबों की तसनीफ़ से पहले ही इमाम अबू हनीफ़ा

के मशहूर शगिर्द (काजी अबू युसूफ और इमाम मोहम्मद) ने इमाम अबू हनीफा के हदीस और फिकहा के दुरुस को किताबी शकल में मुरत्तब कर दिया था जो आज भी दस्तयाब हैं। मशहूर हदीस की किताबों में उम्मून चार या पांच या छ वास्तों से अहादीस जिक्र की गई हैं जबकि इमाम अबू हनीफा के पास अक्सर अहादीस सिर्फ दो वास्तों से आई थीं, इस लिहाज़ से इमाम अबू हनीफा को जो अहादीस मिली हैं वह असहहुल असानदीद के अलावा अहादीसे सहीहा, मरफू, मशहूर और मुतवातिर का मक़ाम रखती हैं। गरज़ ये कि जिन अहादीस की बुनियाद पर फिकह हनफी मुरत्तब किया गया वह उम्मून सनद के एतेबार से आला दरजे की अहादीस हैं।

### हज़रत इमाम अबू हनीफा के असातज़ा

इमाम अबू हनीफा ने तक़रीबन चार हज़ार मशायख से इल्म हासिल किया, खुद इमाम हनीफा का क़ौल है कि मैंने कूफा बसरा का कोई ऐसा मुहद्दिस नहीं छोड़ा जिससे मैंने इल्मी इस्तिफादा न किया हो। तफसीलात के लिए सवानेह इमाम अबू हनीफा का मुतालआ करें, इमाम अबू हनीफा के चंद अहम असातज़ा हसबे जैल हैं:

**शैख हम्माद बिन अबी सुलैमान (वफात 120 हिजरी)** शहर कूफा के इमाम व फकीह शैख हम्माद हज़रत अनस बिन मालिक के सबसे करीब और मोतमद शगिर्द हैं, इमाम अबू हनीफा उनकी सोहबत में 18 साल रहे। 120 हिजरी में शैख हम्माद के इंतिक़ाल के बाद इमाम अबू हनीफा ही उनकी मसनद पर फायज़ हुए। शैख हम्माद मशहूर व मारुफ मुहद्दिस व ताबई शैख इब्राहीम नखई के भी खुसूसी

शगिर्द हैं। इसके अलावा शैख हम्माद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के इल्मी वारिस और नाइब भी शुमार किए जाते हैं।

इमाम अबू हनीफा की दूसरी बड़ी दरसगाह शहर बसरा थी जो इमामुल मुहद्दिसीन शैख हसन बसरी (वफात 110 हिजरी) के उलूमे हदीस से मालामाल थी, यहां भी इमाम अबू हनीफा ने इल्मे हदीस का भरपूर हिस्सा पाया।

**शैख अता बिन अबी रबाह (वफात 114 हिजरी)** मक्का में मुक्कीम शैख अता बिन अबी रबाह से भी इमाम अबू हनीफा ने भरपूर इस्तिफादा किया। शैख अता बिन अबी रबाह ने बेशुमार सहाबए किराम खास कर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से इस्तिफादा किया था। शैख अता बिन अबी रबाह सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खुसूसी शगिर्द शुमार किए जाते हैं।

**शैख इकरमा बरबरी (वफात 104 हिजरी)** यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के खुसूसी शगिर्द हैं। कम व बेश 70 मशहूर ताबईन इनके शगिर्द हैं, इमाम अबू हनीफा भी उनमें शामिल हैं। मक्का में इमाम अबू हनीफा ने इनसे इल्मी इस्तिफादा किया।

**मदीना के सात फुकहा** में से हज़रत सुलेमान और हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर से इमाम अबू हनीफा ने अहादीस की सिमाअत की है। यह सातों फुकहा मशहूर व मारुफ ताबईन थे। हज़रत सुलेमान उम्मुल मोमेनीन हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के परवरदा गुलाम हैं, जबकि हज़रत सालिम हज़रत उमर फारूक

रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते हैं जिन्होंने अपने वालिद सहाबिए रूस हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से तालीम हासिल की थी।

मुल्के शाम में इमाम औज़ाई और इमाम मकहूल से भी इमाम अबू हनीफा ने इल्म हासिल किया।

दूसरे मुहद्दिसीन के तर्ज़ पर इमाम अबू हनीफा ने अहादीस की सिमाअत के लिए हज के असफार का भरपूर इस्तिमाल किया, चुनांचे आपने तकरीबन 55 हज अदा किए। हज की अदाएंगी से पहले और बाद में मक्का और मदीना में क़याम फरमा कर कुरान व सुन्नत को समझने और समझाने में वाफिर वक़्त लगाया। बू उमय्या के आखिरी अहद में जब इमाम अबू हनीफा का हुकुमरानों से इख्तिलाफ हो गया था तो इमाम अबू हनीफा ने तकरीबन 7 साल मक्का में मुक़ीम रह कर तालीम व तअल्लुम के सिलसिले को जारी रखा।

### हज़रत इमाम अबू हनीफा के शगिर्द

सीरतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुसन्निफे अव्वल “अल्लामा शिबली नोमानी” ने अपनी मशहूर व मारूफ किताब “सीरतुन नोमान” में लिखा है कि इमाम अबू हनीफा के दर्स का हल्का इतना कुशादा था कि खलीफए वक़्त की हुदूदे हुकूमत इससे ज़्यादा कुशादा न थीं। सैकड़ों उलमा व मुहद्दिसीन ने इमाम अबू हनीफा से इल्मी इस्तिफादा किया। इमाम शाफई फरमाया करते थे कि जो शख्स इल्मे फिक़ह में कमाल हासिल करना चाहे उसको इमाम अबू हनीफा के फिक़ह की तरफ रुख करना चाहिए और यह भी फरमाया कि अगर इमाम मोहम्मद (इमाम अबू हनीफा के शगिर्द) मुझे न मिलते तो शाफई, शाफई न होता बल्कि कुछ और होता।

इमाम अबू हनीफा के चंद मशहूर शागिर्दों के नाम हसबे ज़ैल हैं जिन्होंने अपने उस्ताद के मसलक के मुताबिक़ दर्स व तदरीस का सिलसिला जारी रखा। काज़ी अबू यूसूफ़, इमाम मोहम्मद बिन हसन अश शैबानी, इमाम जुफ़र बिन हुज़ैल, इमाम यहया बिन सईद अलक़त्तान, इमाम यहया बिन ज़करिया, मुहद्दिस अब्दुल्लाह बिन मुबारक, इमाम वकी बिन ज़र्ह और इमाम दाऊद ताई वगैरह।

**काज़ी अबू यूसूफ़ (वफ़ात 182 हिजरी)** आपका नाम याक़ूब बिन इब्राहीम अंसारी है। 113 हिजरी या 117 हिजरी में कूफ़ा में पैदा हुए। इमाम अबू यूसूफ़ को मआशी तंगी की वजह से तालीमी सिलसिला जारी रखना मुश्किल हो गया था मगर इमाम अबू हनीफा ने इमाम यूसूफ़ और उनके घर के तमाम अखराजात बर्दाशत करके उनको तालीम दी। ज़िहानत, तालीमी शौक और इमाम अबू हनीफा की खुसूसी तवज्जोह की वजह से काज़ी अबू यूसूफ़ एक बड़े मुहद्दिस व फ़कीह बन कर सामने आए। फ़िक़ह हनफी की तदवीन में काज़ी अबू यूसूफ़ का अहम किरदार है। अब्बासी दौरें हुकूमत में काज़िस्स कुज़ात के ओहदे पर फायज़ हुए। यह पहला मौक़ा था जब किसी को काज़ियुल कुज़ात के ओहदे पर फायज़ किया गया। इमाम अबू हनीफा से बाज़ मसाइल में इख़िलाफ़ भी किया, लेकिन पूरी ज़िन्दगी खास कर काज़ियुल कुज़ात के ओहदे पर फायज़ होने के बाद फ़िक़ह हनफी को ही फैलाया। मसलके इमाम अबू हनीफा पर उसूले फ़िक़ह की सबसे पहली किताब तहरीर फरमाई। 182 हिजरी वफ़ात पाई।

**इमाम मोहम्मद बिन हसन अश शैबानी (वफ़ात 189 हिजरी)** आप 131 हिजरी में दमिशक़ में पैदा हुए फिर फ़ुक़हा व मुहद्दिसीन के शहर कूफ़ा चले गए, वहां बड़े बड़े मुहद्दिसीन और फ़ुक़हा की सोहबत



पाई। इमाम अबू हनीफा से तक़रीबन दो साल जेल में तालीम हासिल की। इमाम अबू हनीफा की वफात के बाद काज़ी अबू युसूफ से तालीम मुकम्मल की, फिर मदीना जा कर इमाम मालिक से हदीस पढ़ी। सिर्फ बीस साल की उम्र में मसनदे हदीस पर बैठ गए। यह फिकह हनफी के दूसरे अहम बाज़ू शुमार किए जाते हैं, इसी लिए इमाम अबू युसूफ और इमाम मोहम्मद को सहिबैन कहा जाता है। इमाम मोहम्मद के बेशुमार शगिर्द हैं, लेकिन इमाम शाफई का नाम खास तौर पर ज़िक्र किया जाता है। इमाम मोहम्मद की हदीस की मशहूर किताब “मुअत्ता इमाम मोहम्मद” आज भी हर जगह मौजूद है। इमाम मोहम्मद की तसनीफात बहुत हैं, फिकह हनफी का मदार इन्हीं किताबों पर है, इनकी दर्जे ज़ैल किताबें मशहूर व मारुफ हैं जो फतावा हनफिया का माखज़ हैं।

अलमबसूत, अलजामेउस सगीर, अलजामेउस कबीर, अज़ ज़ियादात, अस सियरुस सगीर, अस सियरुल कबीर।

**इमाम जुफर (वफात 158 हिजरी)** इमाम जुफर बिन हुज़ैल 110 हिजरी में पैदा हुए। इब्तिदाई उम्र में इल्मे हदीस से खास शगफ व तअल्लुक था, अल्लामा नववी ने इनको साहिबुल हदीस में शुमार किया है, फिर इल्मे फिकह की जानिब तवज्जोह की और आखिर उम्र तक यही मशगला रहा। बसरा के काज़ी के हैसियत से भी रहे। आप हज़रत इमाम अबू हनीफा के खास शागिर्दों में से हैं। आप फिकह हनफी के अहम सुतून हैं।

**इमाम यहया बिन सईद अलक़त्तान (वफात 198 हिजरी)** आप 120 हिजरी में पैदा हुए। अल्लामा ज़हबी ने लिखा है कि फन अस्माउर रिजाल (सनदे हदीस पर बहस का इल्म) सबसे पहले उन्होंने ही शुरू

किया है, फिर उसके बाद दूसरे हज़रात मसलन इमाम यहया बिन मईन ने इस इल्म को बाकायदा फन की शकल दी। इमाम यहया बिन सईद अलकत्तान ने हज़रत इमाम अबू हनीफा से इल्मी इस्तिफादा किया है।

**इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक (वफात 181 हिजरी)** यह भी इमाम अबू हनीफा के शागिर्दों में से हैं। इल्मे हदीस में बड़ी महारत हासिल की, यहां तक कि अमिरुल मोमिनीन फिल हदीस का लक़ब मिला। 118 हिजरी में पैदा हुए और 181 हिजरी में वफात पाई। इमाम अब्दुल्लाह बिन मुबारक का क़ौल है कि अगर अल्लाह तआला इमाम अबू हनीफा और सुफयान सौरी के ज़रिये मेरी मदद न फरमाता तो मैं एक आम इंसान से बढ़ कर कुछ न होता।

### **तदवीने फिक़ह**

असरे क़दीम व जदीद में इल्मे फिक़ह की मुश्तलिफ अल्फाज़ के साथ तारीफ की गई है, मगर उनका खुलासा कलाम यह है कि क़ुरान व हदीस की रौशनी में अहकामे शरइया का जानना फिक़ह कहलाता है। अहकामे शरइया के जानने के लिए सबसे पहले क़ुरान करीम और फिर अहादीस की तरफ रुजू किया जाता है। क़ुरान व हदीस में किसी मसअले की वज़ाहत न मिलने पर इजमा व क़यास (यानी क़ुरान व हदीस की रौशनी में नए मसाइल के लिए इजतेहाद) की तरफ रुजू किया जाता है।

फिक़ह को समझने से पहले इमाम अबू हनीफा के एक अहम उसूल व ज़ाबते को ज़ेहन में रखें कि मैं पहले किताबुल्लाह और सुन्नते नबवी को इख्तियार करता हूं, जब कोई मसअला किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल में नहीं मिलता तो सहाब किराम के अक़वाल व

अमल को इख्तियार करता हूँ। उसके बाद दूसरों के फतावे के साथ अपने इजतिहाद व क़यास पर तवज्जोह देता हूँ। जब मसअला क़यास और इजतिहाद पर आ जाता है तो फिर मैं अपने इजतिहाद को तरजीह देता हूँ। यह हज़रत इमाम अबू हनीफा का अपना खुद बनाया हुआ उसूल नहीं है बल्कि उस मशहूर हदीस की इत्तिबा है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को वसीयत फरमाई थी। इसी तरह हज़रत इमाम अबू हनीफा का यह उसूल है कि अगर मुझे किसी मसअले में कोई हदीस मिल जाए चाहे उसकी सनद में कोई ज़ोफ भी हो तो मैं अपने इजतिहाद व क़यास को छोड़ कर उसको क़बूल करता हूँ।

फिक़ह का दार व मदार सहाबिए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ाते अक़दस पर है और इस फिक़ह की बुनियाद वह अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनको हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से सहाबए किराम मसाइले शरइया मालूम करते थे। कूफा शहर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु कुरान व हदीस की रौशनी में लोगों की रहबूआई फरमाते थे। हज़रत अलक़मा बिन कैस कूफी और हज़रत असवद बिन यज़ीद कूफी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के खास शगिर्द हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु खुद फरमाते थे कि जो कुछ मैंने पढ़ा लिखा और हासिल किया वह सब कुछ अलक़मा को दे दिया, अब मेरी मालूमात अलक़मा से ज़्यादा नहीं है। हज़रत अलक़मा और हज़रत असवद के इंतिकाल के बाद

हज़रत इब्राहीम नखई कूफी मसनद नशीन हुए और इल्मे फिक़ह को बहुत कुछ वुसअत दी यहां तक कि उन्हें “फकीहुल इराक़” का लक़ब मिला। हज़रत इब्राहीम नखई कूफी के ज़माने में फिक़ह का गैर मुरत्तब ज़खीरा जमा हो गया था जो उनके शागिर्दों ने खास कर हज़रत हम्माद कूफी ने महफूज़ कर रखा था। हज़रत हम्माद कूफी के इस ज़खीरे को इमाम अबू हनीफा कूफी ने अपने शागिर्दों खास कर इमाम युसूफ़, इमाम मोहम्मद और इमाम जुफर को बहुत मुनज़ज़म शकल में पेश कर दिया जो उन्होंने बाकायदा किताबों में मुरत्तब कर दिया, यह किताबें आज भी मौजूद हैं। इस तरह इमाम अबू हनीफा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के दो वास्तों से हकीकी वारिस बने और इमाम अबू हनीफा के ज़रिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद ने कुरान व सुन्नत की रौशनी में जो समझा था वह उम्मत मुस्लिमा को पहुंच गया। गरज़ ये कि फिक़ह हनफी की तदवीन उस दौर का कारनामा है जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खैरुल कुरून करार दिया और अहादीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुकम्मल हिफाज़त के साथ उसी ज़माने में किताबी शकल में मुरत्तब की गई।

**(वज़ाहत)** इन दिनों बाज़ हज़रात फिक़ह का ही इंकार करना शुरू कर देते हैं हालांकि कुरान व हदीस को समझ कर पढ़ना और इससे मसाइले शरइया का इस्तिंबात करना फिक़ह है। नीज़ कुरान व हदीस में बहुत सी जगह फिक़ह का ज़िक्र भी वज़ाहत के साथ मौजूद हैं। मशहूर हदीस की किताब (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, इब्ने माजा, तबरानी, बैहकी, मुसनद अहमद, मुसनद हिब्बान, मुसनद अहमद बिन हमबल वगैरह) की तालीफ से पहले ही इमाम

अबू हनीफा के शागिर्दों ने फिक्रह हनफी को किताबों में मुरत्तब कर दिया था। अगर वाकई फिक्रह काबिले रद है तो मजकूर हदीस की किताबों के मुसन्निफों ने अपनी किताब में फिक्रह की तरदीद में कोई बाब क्यों नहीं बनाया? या कोई दूसरी मुस्तक़िल किताब फिक्रह की तरदीद में क्यों तसनीफ नहीं की? गरज़ ये कि यह उन हज़रात के हठधरमी है, वरना कुरान व हदीस को समझ कर मसाइल का इस्तिंबात करना ही फिक्रह कहलाता है जिसे जमहूर मुहद्दिसीन व मुफस्सेरीन व उलमाए उम्मत ने तसलीम किया है।

**(नुक्ता)** फिक्रह हनफी का यह खुसूसी इमतिyayज़ है कि साबिक़ा हुकुमतों (खास कर अब्बासिया व उसमानिया हुकूमत) का 80 फीसद क़ानूने अदालत व फौजदारी फिक्रह हनफी रहा है और आज भी बेशतर मुस्लिम मुमालिक का क़ानूने अदालत फिक्रह हनफी पर कायम है। यह क़वानीन कुरान व हदीस की रौशनी में बनाए गए हैं।

### हज़रत इमाम अबू हनीफा की किताबें

हज़रत इमाम अबू हनीफा ने दौराने दर्स जो अहादीस बयान की हैं उन्हें शागिर्दों ने “हद्दसना” और “अखबरना” वगैरह अल्फ़ाज़ के साथ जमा कर दिया। इमाम अबू हनीफा के दरसी इफ़ादात का नाम “किताबुल आसार” है जो दूसरी सदी हिजरी में मुत्तब हुई उस ज़माने तक किताबों की तालीफ़ बहुत ज़्यादा आम नहीं थी। “किताबुल आसार” उस दौर की पहली किताब है जिसने बाद के आने वाले मुहद्दिसीन के लिए तरतीब व तबवीब के राहनुमा उसूल फ़राहम किए। अल्लामा शिबली नोमानी ने “किताबुल आसार” के बहुत से नुस्खों की निशान दही की है लेकिन आम शोहरत चार नुस्खों को

हासिल है। इन नुस्खों में से इमाम मोहम्मद की रिवायत करदा किताब को सबसे ज़्यादा शोहरत व मक़बूलियत हासिल हुई।

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम मोहम्मद

“किताबुल आसार” बरिवायत काज़ी अबू युसूफ

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम जुफर

“किताबुल आसार” बरिवायत इमाम हसन बिन ज़ियाद

**मसानीदे इमाम अबू हनीफा** उलमाए किराम ने हज़रत इमाम अबू हनीफा की पंद्रह मसानीद शुमार की हैं जिसमें अइम्मए दीन्और हुफ्फाज़े हदीस ने आपकी रिवायात को जमा करके हमेशा के लिए महफूज़ कर दिया, उनमें से मुसनद इमाम आज़म इल्मी दुनिया में मशहूर है जिसकी बहुत सी शुरुहात भी लिखी गई हैं। इस सिलसिले में सबसे बड़ा काम मुक्के शाम के इमाम अबुल मुवायद खवारज़मी (वफात 665 हिजरी) ने किया है जिन्होंने तमाम मसानीद को बड़ी ज़खीम किताब जामेउल मसानीद के नाम से जमा किया है।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के मशहूर शगिर्द इमाम मोहम्मद की मशहूर किताबें भी फिक़ह हनफी के अहम माखज़ हैं।

अलमबसूत, अलजामेउस सगीर, अलजामेउस कबीर, अज ज़ियादात, अस सियरुस सगीर, अस सियरुल कबीर।

## **हज़रत इमाम अबू हनीफा का तक्रवा**

किताब व सुन्नत की तालीम और फिक़ह की तदवीन के साथ इमाम साहब ने ज़ोहद व तक्रवा और इबादत में पूरी ज़िन्दगी बसर की। रात का बेशतर हिस्सा अल्लाह तआला के सामने रोने, नफल नमाज़ पढ़ने और तिलावते कुरान में गुज़ारते थे। इमाम साहब ने इल्मे दीन

की खिदमत को ज़रिये मआश नहीं बनाया बल्कि मआश के लिए रेशम बनाने और रेशमी कपड़े तैयार करने का बड़ा कारखाना था जो सहाबिए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत उमर बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में चलता था। इमाम अबू हनीफा का तअल्लुक़ खुशहाल घराने से था, इस लिए लोगों की खास तौर से अपने शागिर्दों की बहुत मदद किया करते थे। आपने 55 हज अदा किए।

## हज़रत इमाम अबू हनीफा की शान में बाज़ उलमाए उम्मत के अक़वाल

इमाम अली बिन सालेह (वफात 151 हिजरी) ने इमाम अबू हनीफा की वफात पर फरमाया “इराक़ का मुफ़्ती और फ़कीह गुजर गया।” (मनाकिबे ज़हबी पेज 18)

इमाम मिसअर बिन किदाम (वफात 153 हिजरी) फरमाते थे कि “कूफा के दो शख्सों के सिवा किसी और पर रश्क नहीं आता। इमाम अबू हनीफा और उनका फ़िक्कह, दूसरे शैख हसन बिन सालेह और उनका जुहद व क़नाअत।” (तारीखे बग़दाद जिल्द 14 पेज 328)

मुल्के शाम के फ़कीह व मुहद्दिस इमाम औज़ाई (वफात 157 हिजरी) फरमाते थे “इमाम अबू हनीफा पेचीदा मसाइल को सब अहले इल्म से ज़्यादा जानने वाले थे।” (मनाकिब कुरदी पेज 90)

इमाम दाऊद ताई (वफात 160 हिजरी) फरमाते थे कि “इमाम अबू हनीफा के पास वह इल्म था जिसको अहले ईमान के दिल क़बूल करते हैं।” (अलखैरातुल हिसान पेज 32)

इमाम सुफयान सौरी (वफात 167 हिजरी) के पास एक शख्स इमाम अबू हनीफा से मुलाकात करके आया। इमाम सुफयान सौरी ने फरमाया तुम रूए ज़मीन के सबसे बड़े फकीह के पास से आ रहे हो। (अलखैरातुल हिसान पेज 32)

इमाम मालिक बिन अनस (वफात 179 हिजरी) फरमाते हैं कि “मैंने अबू हनीफा जैसा इंसान नहीं देखा।” (अलखैरातुल हिसान पेज 28)

इमाम वकी बिन जर्ह (वफात 195 हिजरी) फरमाते हैं “इमाम अबू हनीफा से बड़ा फकीह और किसी को नहीं देखा।”

इमाम यहया बिन मईन (वफात 233 हिजरी) इमाम अबू हनीफा के कौल पर फतवा दिया करते थे और उनकी अहादीस के हाफिज़ भी थे। उन्होंने इमाम अबू हनीफा की बहुत सारी अहादीस सुनी हैं। (जामे बयानुल उलूम, अल्लामा इब्ने बर जिल्द 2 पेज 149)

इमाम सुफयान बिन उयैना (वफात 198 हिजरी) फरमाते थे कि “मेरी आंखों ने अबू हनीफा जैसा इंसान नहीं देखा। दो चीजों के बारे में ख्याल था कि वह शहर कूफा से बाहर न जाएगी मगर वह ज़मीन के आखिरी किनारों तक पहुंच गई। एक इमाम हमज़ा की किरात और दूसरी अबू हनीफा का फिक़ह।” (तारीखे बगदाद जिल्द 13 पेज 347)

इमाम शाफई (वफात 204 हिजरी) फरमाते हैं कि “हम सब इल्मे फिक़ह में इमाम अबू हनीफा के मोहताज हैं, जो शख्स इल्मे फिक़ह में महारत हासिल करना चाहे तो वह इमाम अबू हनीफा का मोहताज होगा।” (तारीखे बगदादी जिल्द 23 पेज 161)

इमाम बुखारी के उस्ताद इमाम मक्की बिन इब्राहीम फरमाते हैं कि “इमाम अबू हनीफा परहेज़गार, आलमे आखिरत के रागिब और अपने



मुआसरीन में सबसे बड़े हाफिज़े हदीस थे।” (मनाकिबुल इमाम अबी हनीफा शैख मौफिक बिन अहमद मक्की)

इमाम मौफिक बिन अहमद मक्की इमाम बकर बिन मोहम्मद जरंजरी (वफात 152 हिजरी) के हवाले से तहरीर करते हैं कि इमाम अबू हनीफा ने किताबुल आसार का इतिखाब चालीस हजार अहादीस से किया है। (मनाकिब इमाम अबी हनीफा)

## हज़रत इमाम अबू हनीफा के उलूम का नफा

हज़रत इमाम अबू हनीफा के इंतिकाल के बाद आपके शागिर्दों ने हज़रत इमाम अबू हनीफा के कुरान व हदीस व फिकह के दुरुस को किताबी शकल दे कर उनके इल्म के नफा को बहुत आम कर दिया है, खास कर जब आपके शगिर्द काज़ी अबू युसूफ अब्बासी हुकूमत में काज़ीयुल कुज़ात के उहदे पर फायज़ हुए तो उन्होंने कुरान व हदीस की रौशनी में इमाम अबू हनीफा के फैसलों से हुकुमती सतह पर अवाम को मुतआरफ कराया, चुनांचे चंद ही सालों में फिकह हनफी दुनिया के कोने कोने में रायज हो गया और उसके बाद यह सिलसिला बराबर जारी रहा हत्ताकि अब्बासी व उसमानी हुकूमत में मज़हबे अबी हनीफा को सरकारी हैसियत दे दी गई चुनांचे आज 1200 साल गुज़र जाने के बाद भी तक़रीबन 75 फीसद उम्मत मुस्लिमा इसपर अमल पैरा है और हज़ार साल से उम्मत मुस्लिमा की अक्सरियत इमाम अबू हनीफा की कुरान व हदीस की तफसीर व तशरीह और वज़ाहत व बयान पर ही अमल करती चली आ रही है। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान के मुसलमानों की बड़ी अक्सरियत जो दुनिया में मुस्लिम आबादी का 55 फीसद से

ज्यादा है, इसी तरह तुर्की और रूस से अलग होने वाले मुमालिक नीज़ अरब मुमालिक की एक जमाअत कुरान व हदीस की रौशनी में इमाम अबू हनीफा के ही फैसलों पर अमल पैरा है।

## मसादिर व मराजे

हज़रत इमाम अबू हनीफा की शख्सियत पर जितना कुछ मुख्तलिफ ज़बानों खास कर अरबी ज़बान में लिखा गया है वह उम्मान दूसरे किसी मुहद्दिस या फकीह या आलिम पर नहीं लिखा गया। यह इमाम अबू हनीफा की इल्मी व अमली खिदमात के क़बूल होने की बज़ाहिर अलामत है। हज़रत इमाम अबू हनीफा की शख्सियत के मुख्तलिफ पहलुओं पर जो किताबें लिखी गई हैं उनमें सेछकके नाम हस्बे ज़ैल हैं। शैख जलालुद्दीन सुयूती की किताब तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा” से खुसूसी इस्तिफादा करके इस मज़मून को लिखा है। अल्लाह तआला इन तमाम मुसन्निफों को अजरे अज़ीम अता फरमाए, आमीन।

## हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक़ बाज़ अरबी किताबें

मनाकिबुल इमाम आज़म - शैख मुल्ला अली क़ारी (वफात 1014 हिजरी)

तरजुमतुल इमाम आज़म अबी हनीफा अन नोमान बिन साबित- इमाम खतीब बगदादी (वफात 392 हिजरी)

तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा- अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती (वफात 911 हिजरी)

तुहफतुस सुलतान फी मनाकिबि नोमान- शैख काज़ी मोहम्मद बिन हसन बिन कास अबुल कासिम (वफात 324 हिजरी)

उक़दुल मरजान फी मनाकिबि अबी हनीफा नोमान- शैख अबू जाफर अहमद बिन मोहम्मद मिस्री तहावी (वफात 321 हिजरी)

उक़दुल जिमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबू हनीफा नोमान- शैख मोहम्मद बिन युसूफ सालिही (वफात 943 हिजरी)

उक़दुल जिमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबू हनीफा नोमान- मौलवी मोहम्मद मुल्ला अब्दुल कादिर अफगानी।

अखबार अबी हनीफा व असहाबिहि - शैख काज़ी अबी अब्दुल्लाह हुसैन बिन अली अस सैमरी (वफात 436 हिजरी)

फज़ाइल अबी हनीफा व अखबारुहु व मनाकिबुहु- शैख अबुल कासिम अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद (वफात 330 हिजरी)

शकाएकुन नोमान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबी हनीफतुन नोमान- शैख जारुल्लाह अबुल कासिम ज़मख़शरी(वफात 538 हिजरी)

अलखैरातुल हिसान फी मनाकिबिल इमाम आज़म अबी हनीफा नोमान- शैख मुफ़्ती अल हिजाज़ शैख शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर मक्की (वफात 973 हिजरी)

किताबु मनाज़िलिल अइम्मा अल अरबआ- इमाम अबू ज़करिया यहया बिन इब्राहीम (वफात 550 हिजरी)

मनाकिबुल इमाम अबी हनीफा व साहिबैहि अबी युसूफ व मोहम्मद बिन अलहसन- इमाम हाफिज़ अबी अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अहमद उसमान ज़हबी (वफात 748 हिजरी)

किताबु मकानतिल इमाम अबी हनीफा फी इल्मिल हदीस- शैख मोहम्मद अब्दुर रशीद नोमानी अलहिन्दी, तहकीक शैख अब्दुल फत्ताह अबू गुद्दह

अबू हनीफा नोमान व आराउहुल कलामिया- शैख शमसुद्दीन मोहम्मद अब्दुल लतीफ मिस्री।

अबू हनीफा नोमान (इमामुल अइम्मा अलफुकहा)- शैख वहबी सुलैमान गावजी।

तानीबुल खतीब अला मा साकहू फी तरजुमति अबी हनीफा मिनल अकाज़ीब- शैख मोहम्मद ज़ाहिद बिन हसन अल कौसरी।

अबू हनीफा, हयातुहू व असरूहू आराउहू व फिकहुहू- शैख मोहम्मद अबू ज़ोहरा।

मनाकिबुल इमाम आज़म अबी हनीफा (पहला अरैर दूसरा हिस्सा)- मौफिक बिन अहमद मक्की, मोहम्मद बिन शहाब इबनुल बज़ज़ार कुर्दी।

अइम्मतुल फिकहिल इस्लामी अबू हनीफा, शाफई, मालिक, इब्ने हमबल- शैख नूह बिन मुस्तफा रूमी हनफी।

मनाकिबुल इमाम आज़म अबी हनीफा- शैख मौफिक बिन अहमद अलख्वारज़मी।

अल जवाहिरुल मुज़ीअह फी तराजिमिल हनफिया- शैख अब्दुल कादिर कुरशी।

हयाते अबी हनीफा- शैख सैयद अफीफी।

तुहफतुल इखवान फी मनाकिबि अबी हनीफा- अल्लामा अहमद अब्दुल बारी आमूहल हदीदी।

अत्तालिकाति हिसान अला तुहफतिल इखवान फी मनाकिब अबी हनीफा- अल्लामा मोहम्मद अहमद मोहम्मद आमूह।

उकूदुल जवाहिरिल मुनीफा फी अदिल्लति मज़हबिल इमाम अबी हनीफा- अल्लामा मुहद्दिस सैयद मोहम्मद मुरतज़ा अज़ जुबैदी हुसैनी हनफी (वफात 1205 हिजरी)

## हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक बाज़ उर्दू किताबें

सीरतुन नोमान- अल्लामा शिबली नोमानी।

सीरते अइम्मा अरबआ- काज़ी अतहर मुबारकपुरी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सियासी ज़िन्दगी- मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी।

मकामे अबू हनीफा- मौलाना सरफराज़ सफ़दर खान।

इमाम आज़म और इल्मे हदीस- मौलाना मोहम्मद अली सिद्दीकी कांधलवी।

इमाम आज़म अबू हनीफा: हालात व कमालात, मलफूज़ात- डाक्टर मौलाना खलील अहद थानवी (तबयीज़ुस सहीफा फी मनाकिबिल इमाम अबी हनीफा का तरजुमा)

तकलीदे अइम्मा और मकामे इमाम अबू हनीफा- मौलाना मोहम्मद इसमाईल संभली (राकिमुल हुरूफ़ के हकीकी दादा मोहतरम)

इमाम आज़म अबू हनीफा, हयात व कारनामे- मौलाना मोहम्मद अब्दुर रहमान मज़ाहिरी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा पर इरज़ा की तोहमत - मौलाना नेमतुल्लाह आज़मी साहब।

इल्मे हदीस में इमाम अबू हनीफा का मक़ाम व मरतबा - मौलाना हबीबुर रहमान आज़मी साहब।

इमाम आज़म अबू हनीफा और मोतरेज़ीन - मौलाना मुफ्ती सैयद मेहदी हसन शाहजहांपूरी।

फकाहत इमाम आज़म अबू हनीफा- मौलाना खुदा बख्श साहब रब्बानी।

मलफूज़ाते इमाम अबू हनीफा- मुफ्ती मोहम्मद अशरफ उसमानी।

हदाइकुल हनफिया (इमाम अबू हनीफा से 1300 हिजरी तक दुनिया भर के एक हज़ार से ज़ायद हनफी उलमा व फुक्हा का ज़िक्र)- मौलवी फकीर अहमद जेहलमी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा के 100 किस्से- मौलाना मोहम्मद ओवैस सरवर।

इमाम आज़म अबू हनीफा के हैरतअंगेज़ वाक़्यात- मौलाना अब्दुल क़य्यूम हक्क़ानी।

इमाम अबू हनीफा की ताबेइयत और सहाबा से उनकी रिवायत- मौलाना अब्दुश शहीद नोमानी।

इमाम आज़म अबू हनीफा शहीदे अहले बैत- मुफ्ती अबुल हसन शरीफुल्लाह अलकौसरी।

अत्तरिकुल अस्लम उर्दू शरह मुस्नदुल इमाम आज़म- मौलाना मोहम्मद ज़फर इक़बाल साहब।

इमाम अबू हनीफा की मुहद्दिसाना हैसियत- मौलाना सैयद नसीब अली शाह अलहाशमी, मौलाना मुफ्ती नेमत हक्क़ानी।

इमाम अबू हनीफा का आदिलाना दिफा (अल्लामा कौसरी की किताब तानीबुल खतीब का उर्दू तरजुमा)- हाफिज़ अब्दुल कुद्दूस खान।

हयात हज़रत इमाम अबू हनीफा (शैख अबू ज़ोहरा मिस्री की अरबी किताब का तरजुमा)- प्रोफेसर गुलाम अहमद हरीरी।

हज़रत इमाम अबू हनीफा की सवानेह हयात से मुतअल्लिक अंग्रेजी ज़बान में भी बहुत सी किताबें शाये हुई हैं, लेकिन अल्लामा शिबली नोमानी की किताब Imam Abu Hanifah: Life and Works का मुतालआ इंतिहाई मुफीद है।

एलाउस सुनन- असरे हाज़िर के जय्यिद आलिम व मुहद्दिस शैख ज़फर अहमद उसमानी थानवी ने हज़रत इमाम अबू हनीफा और उनके शागिर्दों से मंकूल तमाम मसाइले फिक्हिय्या को 22 जिल्दों में अहादीसे नबविया से मुदल्लल किया है। मुल्के शाम के मशहूर हनफी आलिम शैख अब्दुल फत्ताह अबू गुद्दह (वफात 1417 हिजरी) ने इस किताब की तकरीज़ तहरीर फरमाई है। अरबी ज़बान में तहरीर क़दा इस अज़ीम किताब की 22 मोटी जिल्दें हैं जो अरब व अजम में आसानी से हासिल की जा सकती हैं।

अल्लाह तआला इस खिदमत को क़बूल फरमा कर अजरे अज़ीम अता फरमाए आमीन।

## लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी का तअल्लुक सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में तकरीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाई।

डाक्टर नजीब कासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिलकी, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी को “अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी” यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में **डाक्टरेट की डिग्री** से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में



अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहकीकी मकाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी ज़बानों में तहरीर की हैं। 1999 से रियाज़(सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअक्किद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी की वेब साइट ([www.najeebqasmi.com](http://www.najeebqasmi.com)) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौजूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (**दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस**) की ताईद में ख़ूब तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

<http://www.najeebqasmi.com/>

[najeebqasmi@gmail.com](mailto:najeebqasmi@gmail.com)

[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)

[Najeeb Qasmi - YouTube](#)

Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:

**Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor**

# AUTHOR'S BOOKS



## IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، جی علی الصلاة، عمرہ کا طریقہ، تحفہ رمضان، معلومات قرآن، اصلاحی مضامین جلد ۱،  
اصلاحی مضامین جلد ۲، قرآن وحدیث: شریعت کے دواہم ماخذ، سیرت النبی ﷺ کے چند پہلو،  
زکوٰۃ و صدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم و ذکر

## IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology  
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi  
Come to Prayer, Come to Success  
Ramadan - A Gift from the Creator  
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat  
A Concise Hajj Guide  
Hajj & Umrah Guide  
How to perform Umrah?  
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith  
Rights of People & their Dealings  
Important Persons & Places in the History  
An Anthology of Reformative Essays  
Knowledge and Remembrance

## IN HINDI LANGUAGE:

کوران اور ہدیس - اسلامی آئیڈیالوجی کے مین سورس  
سیرت النبی کے مختلف پہلو  
نماز کے لیے آؤ، سफलता के लिए आओ  
रमज़ान - اہلہ کا ایک उपहार  
ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस  
हज और उमराह गाइड  
मुख्तसर हज्जे मबरूर  
उमरہ کا तरीکا  
پارواریکہ मामले کوران اور ہدیس کی روشانی میں  
لوگوں کے अधिकार और उनके मामलात  
महत्वपूर्ण व्यक्ति और स्थान  
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन  
इल्म और जिक्र



First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages  
(Urdu, Eng. & Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM

HAJJ-E-MABROOR